MADRASATUL MADINA BALIGHAN (HINDI)

ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से चौथा मदनी काम

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सतर नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)
+91 98987 32611
E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़रिश्ते उस के लिए इस्तिग़फ़ार (यानी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे ।[1]

अबस गुनाहों की शामत में मारे फिरते हो ख़ुदा की तुम पे हो रेहमत अगर दुरूद पढ़ो[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआने पाक की अहम्मिय्यत व ज़रूरत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम मुसलमान हैं और मुसलमान के ईमान का बुन्यादी तक़ाज़ा **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत है, जबकि **अल्लाह** पाक से महब्बत की एक अलामत क़ुरआने करीम से महब्बत है और क़ुरआने पाक वोह मुक़द्दस किताब है, जिस को **अल्लाह** पाक ने जिस ज़बान में नाज़िल फ़रमाया, वोह ज़बान तमाम ज़बानों से अफ़्ज़ल, जिस महीने में नाज़िल फ़रमाया, वोह महीना सब महीनों में अफ़्ज़ल, जिस रात में नाज़िल फ़रमाया,

[1] ..... معجم اوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ۱/۴۹۷، حدیث: ۱۸۳۵

[2] ....नूरे ईमान, स. 57

वोह रात हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल, जिस नबी पर नाज़िल फ़रमाया, वोह नबी तमाम नबियों से अफ़्ज़ल और जो इस को सीखे सिखाए वोह इन्सानों में बेहतरीन इन्सान बन जाए। जैसा कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ[1] यानी तुम में से बेहतर शख़्स वोह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए। चुनान्चे,

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हिम्मत कीजिए ! कुरआने पाक खुद भी पढ़ना सीखिए और दूसरों को भी सिखाइए कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : कुरआने पाक सीखो और उस की तिलावत करो, क्यूंकि कुरआने पाक की मिसाल ऐसे शख़्स के लिए जो उसे सीखता है, फिर उस की तिलावत करता है और उसे नमाज़ में पढ़ता है, कस्तूरी से भरे हुवे उस थेले की त़रह़ है जिस की ख़ुश्बू हर त़रफ़ मेहकती है और जो शख़्स कुरआने करीम सीखे मगर तिलावत न करे तो उस की मिसाल कस्तूरी के उस थेले की त़रह़ है जिस का मुंह बांध दिया गया हो।[2]

मुझ को अल्लाह से महब्बत है — येह उसी की अ़त़ा व रेहमत है
जिस को सरकार से महब्बत है — उस की बख़्शिश की येह ज़मानत है
दिल में कुरआं की मेरे अ़ज़मत है — और प्यारी हर एक सुन्नत है[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1] ..... بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم من تعلم القرآن وعلمه، ص۱۲۹۹، حدیث: ۵۰۲۷

[2] ..... ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی سورۃ...الخ، ص۶۶۹، حدیث: ۲۸۷۶

[3] ....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 684

फ़ुरक़ाने ह़मीद" के नव[9] हुरूफ़ की निस्बत से क़ुरआने पाक पढ़ने के 9 फ़ज़ाइल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबारका में क़ुरआने करीम पढ़ने के बहुत ज़्यादा फ़ज़ाइल मरवी हैं, हुसूले बरकत के लिए चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेशे ख़िदमत हैं :

﴿1﴾ ☞ मेरी उम्मत की बेहतरीन इबादत क़ुरआने करीम पढ़ना है ।[1]

﴿2﴾ ☞ क़ुरआने करीम पढ़ा करो ! येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की[2] शफ़ाअ़त करेगा ।[3]

﴿3﴾ ☞ जो शख़्स **किताबुल्लाह** में से एक ह़र्फ़ पढ़ेगा तो उसे एक नेकी मिलेगी और येह एक नेकी 10 नेकियों के बराबर होगी, मैं नहीं केहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है ।[4]

[1] ..... شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ادمان تلاوته، ۲/۳۵۴، حدیث: ۲۰۲۲

[2] ....मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : (पढ़ने वालों से अगर्चे) क़ुरआन की तिलावत करने वाले, इस को सीखने सिखाने और इस पर अ़मल करने वाले सब ही मुराद होते हैं मगर यहां तिलावत करने वाले मुराद हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह, क़ुरआने पाक के फ़ज़ाइल, पेहली फ़स्ल, 3/226)

[3] ..... مسلم، کتاب صلاة ... الخ، باب فضل قراءة ... الخ، ص ۲۹۰، حدیث: ۲۵۲ (۸۰۴)

[4] ..... ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی من قرأ ... الخ، ص ۶۷۶، حدیث: ۲۹۱۰

《4》 ☞ जिस ने कुरआने करीम की कोई आयते मुबारका तिलावत की तो वोह इस के लिए क़ियामत के दिन नूर होगी ।(1)

《5》 ☞ कुरआने करीम देख कर पढ़ने वाले की फ़ज़ीलत उस शख़्स पर जो बिग़ैर देखे पढ़े, ऐसी है जैसे फ़र्ज़ की फ़ज़ीलत नफ़्ल पर ।(2)

《6》 ☞ जो शख़्स पूरा कुरआने करीम देख कर पढ़े तो **अल्लाह** पाक उस के लिए जन्नत में एक दरख़्त लगा देता है ।(3)

《7》 ☞ जो शख़्स कुरआने करीम देख कर तिलावत करे उस को 2000 नेकियां मिलेंगी और जो ज़बानी पढ़े उस को 1000 नेकियां मिलेंगी ।(4)

《8》 ☞ जो शख़्स देख कर कुरआने करीम पढ़ने का आ़दी हो तो जब तक दुन्या में रहेगा उस की बीनाई मेह़फ़ूज़ रहेगी ।(5)

《9》 ☞ कुरआने करीम पढ़ने में महारत रखने वाला किरामन कातिबीन के साथ है और जो मशक़्क़त के साथ अटक अटक कर कुरआने करीम पढ़ता है(6) उस के लिए दुगना सवाब है ।(7)

---

[1] .... مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۳۴۲، حدیث:۸۷۱۸

[2] .... کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السابع فی...الخ، المجلد الاول، ۱/۲۶۰، حدیث:۲۲۹۹

[3] .... جمع الجوامع، حرف المیم، ۷/۲۴۵، حدیث:۲۲۷۶۶

[4] .... کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السابع...الخ، المجلد الاول، ۱/۲۶۹، حدیث:۲۴۰۲

[5] .... کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السابع...الخ، المجلد الاول، ۱/۲۶۹، حدیث:۲۴۰۳

[6] ....मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : जो कुन्द ज़ेह्न, मोटी ज़बान वाला कुरआने पाक सीख तो न सके मगर कोशिश में लगा रहे कि मरते दम तक कोशिश किए जाए वोह डबल सवाब का मुस्तह़िक़ है । (मिरआतुल मनाजीह़, कुरआने पाक के फ़ज़ाइल, तीसरी फ़स्ल, 3/219)

[7] .... مسلم، کتاب صلاۃ...الخ، باب فضل الماھر...الخ، ص۲۸۸، حدیث:۲۴۴ (۷۹۸)

ज़मानए नबवी में क़ुरआने पाक सीखने का मुबारक अन्दाज़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अक्सरो बेशतर बारगाहे रिसालत मआब में हाज़िर रेहते और हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने इन जानिसारों की तालीमो तरबियत का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाया करते । दिन हो या रात, सफ़र हो या ह़ज़र, ह़ालत जंग की हो या अम्न की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस्लामी अह़कामात सिखाते ही रेहते, इसी तरबियत में क़ुरआने पाक सीखने सिखाने के ह़ल्क़े भी हुवा करते थे, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआने करीम सीखने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : जब हम सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआने करीम की 10 आयात सीख लेते तो उस के बाद वाली 10 आयात उस वक़्त तक न सीखते जब तक उन सीखी हुई आयात में जो कुछ बयान हुवा होता उसे जान कर अ़मल न कर लेते ।[1]

सहाबए किराम का क़ुरआने पाक सिखाना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआने पाक सीख कर उसे दूसरों को सिखाने की भी ह़त्तल मक़्दूर कोशिश फ़रमाई और जिसे

[1] .....مستدرك، كتاب فضائل القرآن، تعلم القرآن مع العمل عليه، ۲/۲۵۹، حديث: ۲۰۹۱

जिस क़दर क़ुरआने पाक आता वोह दूसरे को सिखा देता। जैसा कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो कुछ **अल्लाह** पाक ने आप को सिखाया है उस में से मुझे भी कुछ सिखाइए। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे क़ुरआन सीखने के लिए अपने एक सहाबी के पास भेज दिया। उन्हों ने उसे सूरतुज़्ज़िलज़ाल सिखानी शुरूअ़ की और जब इस सूरत की आख़िरी आयत

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

पर पहुंचे तो सीखने वाले सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : बस मुझे येही काफ़ी है, सिखाने वाले सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह बात बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इसे छोड़ दो इस ने सीख लिया है।[1]

एह्ले सुफ़्फ़ा और क़ुरआने पाक

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अस्हाबे सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का तआ़रुफ़ कराते हुवे इमाम अबू नुऐम अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह वोह मुक़द्दस व पाकीज़ा ह़ज़रात हैं, जिन्हें **अल्लाह** पाक ने न सिर्फ़ दुन्या की आराइश व ज़ेबाइश पर फ़रेफ़्ता (आ़शिक़ व शैदा) होने से मेह़फ़ूज़ रखा बल्कि दुन्यवी साज़ो सामान के इम्तिह़ान में इब्तिला की वज्ह से फ़राइज़ में कोताही से भी उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई और उन्हें फ़ुक़रा व ग़ुरबा का इमाम व पेशवा बनाया, उन मुक़द्दस व पाकीज़ा लोगों को एह्लो अ़याल की फ़िक्र दामनगीर थी न मालो दौलत न होने की कोई परवा। उन्हें कोई ह़ालत **अल्लाह**

[1] ..... روح البیان، پ۱۴، النحل، تحت الآیۃ: ۱۰۲، ۵/ ۸۳

पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करती न तिजारत। वोह दुन्या छूटने पर ग़म ज़दा होते न उस चीज़ के पाने से ख़ुश होते जो आख़िरत में नफ़्अ़ देने वाली न होती। बल्कि उन की ख़ुशियों का तअ़ल्लुक़ अल्लाह करीम की रिज़ा से था और उन के ग़मों का सबब ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हात का ज़ाएअ़ हो जाना और औरादो वज़ाइफ़ का रेह जाना था।[1]

मज़ीद फ़रमाते हैं : येह लोग कुरआने करीम सीखने और समझने में मश्ग़ूल रेहते और इस बात के मुश्ताक़ होते कि उन्हें दीने इस्लाम की नई बात मिल जाए या साबिक़ा दोहरा ली जाए। चुनान्चे,

(अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से एक सहाबी) हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए जबकि हम मुसलमानों में सब से ग़रीब थे, एक आदमी हमें कुरआन सुना रहा था और हमारे लिए दुआ़ कर रहा था। मेरा ख़याल है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी को सहीह़ त़रह़ देख न पाए थे क्यूंकि लिबास मुकम्मल न होने की वज्ह से हम एक दूसरे से ख़ुद को छुपाते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ से ह़ल्क़ा बनाने का इशारा फ़रमाया तो सब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द ह़ल्क़ा बना कर बैठ गए, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम क्या कर रहे थे ? अ़र्ज़ की : येह आदमी हमें कुरआन सुना रहा था और हमारे लिए दुआ़ कर रहा था। इरशाद फ़रमाया : उसी त़रह़ करो, जिस त़रह़ कर रहे थे। फिर इरशाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिए हैं, जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग शामिल

[1] ..... حلیۃ الاولیاء، ذکر اھل الصفۃ، ۱/۴۱۴

किए, जिन के साथ मुझे भी बैठने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।[1]

इबादत हो तो ऐसी हो, तिलावत हो तो ऐसी हो सरे शब्बीर तो नेज़े पे भी क़ुरआं सुनाता है[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने पाक सिखाने के लिए दूर दराज़ का सफ़र

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! कलामे ख़ुदावन्दी से दीगर लोगों को रू शनास कराने के लिए बहुत से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने दूर दराज़ अ़लाक़ों का सफ़र किया, सुऊ़बतें बरदाश्त कीं मगर इस राह से न हटे, मसलन एह्ले मदीना में से बैअ़ते अ़क़बए ऊला के वक़्त जिन ख़ुश बख़्तों के सीने नूरे ईमान से मुनव्वर हुवे वोह इस्लाम की चन्द बुन्यादी बातें सीखने के बाद जब वापस अपने देस को लौटे तो उन्हें अपने दिलों में एक ख़ला सा मेह़सूस हुवा और बहुत जल्द उन्हें इस बात का एह़सास हो गया कि उन्हों ने अपने दिल में नूरे वह़दानिय्यत की जो शम्अ़ जलाई है, उसे मज़ीद जलाए रखने और दूसरों तक उस की रौशनी पहुंचाने के लिए उन्हें कुछ करना होगा। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब अन्सार बैअ़ते अ़क़बए ऊला के बाद आइन्दा साल मौसमे ह़ज में मिलने का वादा कर के अपनी क़ौम की त़रफ़ लौट गए। तो वापस पहुंच कर उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि हमारे पास किसी ऐसे शख़्स को भेजें, जो लोगों को क़ुरआने पाक पढ़ाए। चुनान्चे, हुज़ूर

[1] ..... حلیۃ الاولیاء، ذکر اھل الصفۃ، ۱/۴۱۹، حدیث: ۱۲۰۹

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 437

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी अ़ब्दुद्दार से तअ़ल्लुक़ रखने वाले हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के पास भेजा। आप ने क़बीलए बनी ग़नम के हज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां क़ियाम फ़रमाया और लोगों को क़ुरआने पाक पढ़ाने लगे। इस के साथ साथ आप दीगर लोगों के पास जा कर उन्हें इस्लाम की दावत भी दिया करते, यहां तक कि अन्सार के अक्सर घराने और सरदार व शुरफ़ा इस्लाम ले आए। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस बारगाहे रिसालत में लौट गए।(1)

इसी त़रह़ एक बार 70 अन्सारी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तालीमे क़ुरआने पाक के लिए रवाना फ़रमाया था।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में भी आता है कि आप हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर लब्बैक केहते हुवे लोगों को क़ुरआन सिखाने के लिए यमन तशरीफ़ ले गए थे।(3) इस के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में उन के हुक्म पर बसरा जा कर क़ुरआनो सुन्नत सिखाने में मश्ग़ूल रहे।(4) जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रजा उ़त़ारिदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा की उस मस्जिد में हमारे

(1) .... حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، مصعب بن عمیر الداری، ۱/۱۵۲، رقم: ۳۳۹

(2) .... مسلم، کتاب الامارۃ، باب ثبوت الجنۃ للشہید، ص۷۵۸، حدیث: ۱۴۷(۱۷۷)

(3) .... حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، ابو موسیٰ الاشعری، ۱/۳۲۲، حدیث: ۸۵۳ ماخوذاً

(4) .... دارمی، المقدمۃ، البلاغ عن رسول اللہ و تعلیم السنن، ص۱۵۸، حدیث: ۵۶۴ ماخوذاً

पास (क़ुरआने पाक सीखने सिखाने के) हल्क़ों में तशरीफ़ फ़रमा होते थे। गोया मैं इस वक़्त भी उन्हें मुलाहज़ा कर रहा हूं कि वोह दो सफ़ेद चादरों में मल्बूस मुझे क़ुरआने करीम पढ़ा रहे हैं।[1]

इबादत रियाज़त तिलावत से ग़फ़्लत न करना कि मौक़अ़ सुनेहरी मिला है[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गवर्नरी पर तालीमे क़ुरआने पाक को तरजीह देना

ख़लीफ़ए दुवम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब मुल्के शाम (Syria) फ़त्ह हुवा तो हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त लिखा कि शामियों की कसरत के बाइ़स कई शहर आबाद हो गए हैं, यहां ऐसे लोगों की अशद ज़रूरत है, जो इन्हें क़ुरआने पाक की तालीम दें और ज़रूरी दीनी मसाइल समझाएं, लेहाज़ा आप ऐसे अफ़राद के ज़रीए मेरी मदद फ़रमाएं जो तदरीसी सलाहिय्यत रखते हों। चुनान्चे, इस अ़ज़ीम काम के लिए दो जलीलुल क़द्र (यानी मुअ़ज़्ज़ज़) सह़ाबए किराम यानी ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल और सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने ख़ुद को पेश फ़रमाया, मगर जब इन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन से मदीने शरीफ़ छोड़ कर मुल्के शाम जाने की इजाज़त त़लब की,[3] तो अमीरुल मोमिनीन न माने, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इसरार पर इस शर्त़ के साथ

[1] ..... حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المھاجرین، ابو موسی الاشعری، ۱/۳۲۲، رقم: ۸۵۴

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 455

[3] ..... طبقات کبریٰ، ذکر من جمع القرآن علی عھد رسول، ۲/۲۷۲ ملتقطًا

जाने की इजाज़त दी कि वहां के गवर्नर बन जाएं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गवर्नर बनना भी क़बूल न किया और अ़र्ज़ की : मैं तो शाम इस लिए जाना चाहता हूं ताकि वहां के लोगों को **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाऊं और उन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ नमाज़ पढ़ाऊं। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नेकी की दावत आ़म करने का जज़्बा देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़ीद इन्कार न फ़रमा सके और आख़िरेकार उन्हें जाने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी।(1)

फिर रवानगी से पेहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तीनों ह़ज़रात से इरशाद फ़रमाया कि हिम्स (Homs) शह्र से इब्तिदा कीजिएगा, वहां तुम लोगों की त़बीअ़तें मुख़्तलिफ़ पाओगे, कुछ लोग बहुत जल्द क़ुरआन की तालीम ह़ासिल कर लेंगे, जब देखो कि लोग अब आसानी से तालीम ह़ासिल कर रहे हैं तो एक फ़र्द उन के पास ठेहर जाए और एक आगे दिमश्क़ निकल जाए जबकि तीसरा फ़िलिस्त़ीन चला जाए। लेहाज़ा येह तीनों ह़ज़रात हिम्स तशरीफ़ लाए और इतना अ़र्सा वहां रहे कि उन लोगों की तालीम पर इत़्मीनान हो गया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वहीं ठेहर गए और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिमश्क़ की त़रफ़ चले गए और सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़िलिस्त़ीन तशरीफ़ ले गए।(2)

---

[1] ..... تاریخ مدینۃ دمشق، ۵۴۶۴ - عویمر بن زید بن قیس، ۴۷/۱۳۵

[2] ..... طبقات کبری، ذکر من جمع القرآن علی عھد رسول، ۲/۲۷۲ ملتقطًا

फ़िल्मों से ड्रामों से दे नफ़रत तू इलाही बस शौक़ मुझे नातो तिलावत का ख़ुदा दे[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एह्ले शाम पर सब से बड़ा एह्सान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अन्दाज़े ह़यात पर क़ुरबान जाइए ! उन के दिल में तालीमे क़ुरआन को आ़म करने और सुन्नतें सिखाने का कैसा जज़्बा कार फ़रमा था कि इस के लिए मदीनए मुनव्वरा की पुर बहार फ़ज़ाओं को छोड़ कर शाम (Syria) का सफ़र इख़्तियार किया। अगर्चे नेकी की दावत को आ़म करने में दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लिया मगर एह्ले शाम पर जो एह़साने अ़ज़ीम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किया, वोह रेहती दुन्या तक सुनेहरी हुरूफ़ से लिखा जाता रहेगा और वोह एह़सान येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह हस्ती हैं जिन्हों ने एह्ले दिमश्क़ की एक कसीर तादाद को क़ुरआने करीम पढ़ना सिखाया। जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में नमाज़े फ़ज्र के बाद रोज़ाना सेंकड़ों की तादाद में लोग आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर क़ुरआने पाक पढ़ा करते थे। आप ने लोगों की कसरत की बिना पर 10-10 अफ़राद पर मुश्तमिल ह़ल्क़े बना रखे थे जिन पर एक एक निगरान व ज़िम्मेदार मुक़र्रर था। वोह निगरान उन को पढ़ाता और आप मेह़राब में खड़े हो कर सब की निगरानी फ़रमाया करते, जब कोई शख़्स ग़लती करता तो ह़ल्क़ए निगरान उस की इस्लाह़ करता और जब कोई ह़ल्क़ए निगरान ग़लती करता दिखाई देता तो आप उस की इस्लाह़ फ़रमाते। एक बार आप ने अपने एक शागिर्द को क़ुरआने करीम पढ़ने वालों की तादाद शुमार करने का हुक्म इरशाद

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 114

फ़रमाया और उस वक़्त पढ़ने वाले लोगों को शुमार किया गया तो उन की तादाद 1600 से कुछ ज़ाइद थी । येह सिलसिला इस कामयाबी से जारी रहा कि आप के विसाले बरहक़ के बाद आप के एक होनहार शागिर्द हज़रते सय्यिदुना इब्ने आमिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह ज़िम्मेदारी ख़ूब निभाई ।(1)

शैख़े तरीक़त अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه महब्बते क़ुरआन में तिलावते क़ुरआन की तौफ़ीक़ मांगते हुवे क़ारिए क़ुरआं बनने, ख़िदमते क़ुरआन की जुस्तुजू लिए बारगाहे इलाही में कुछ इस तरह दुआ गो हैं :

इस को रोज़ाना तिलावत की भी तू तौफ़ीक़ दे *क़ारिए क़ुरआं बना और ख़ादिमे क़ुरआं बना*(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरबियत की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को तालीमे क़ुरआने पाक को आम करने के अज़ीम काम पर रवाना करने लगे तो जल्द और बेहतर नताइज के हुसूल के लिए पेहले आप ने उन की मदनी तरबियत फ़रमाई, जिस के बाद में बेहतरीन समरात ज़ाहिर भी हुवे । इस से हमें भी येह मदनी फूल सीखने को मिलता है कि जब किसी इस्लामी भाई को कोई तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी दी जाए तो पेहले उस की मदनी तरबियत भी की जाए ताकि कम वक़्त में अच्छे नताइज ज़ाहिर हों ।

[1]......معرفة القراء الكبار، ۷-ابو الدرداء، ۱/۱۲۵ مفهومًا بتقدم وتأخر

[2].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 631

क़ुरआने पाक एक दूसरे से पूछ कर पढ़ना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दौर में जहां सिखाने का जज़्बा बे मिसाल था वहीं सीखने का जज़्बा भी हर एक में बे मिस्ल था, चुनान्चे, एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे लोगों के पास गए जो कुरआने पाक एक दूसरे से पूछ पूछ के पढ़ रहे थे तो आप ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह क्या है ? अ़र्ज़ की : نَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ وَنَتَرَاجَعُ यानी हम कुरआने पाक पढ़ रहे हैं और जहां मस्अला पेश आता है, एक दूसरे से पूछ लेते हैं। इरशाद फ़रमाया : تَرَاجَعُوْا وَلَاتَلْحَنُوْا ठीक है एक दूसरे से पूछ के पढ़ते रहो मगर ग़लत न पढ़ना।[1]

40 साल तक क़ुरआने करीम पढ़ाया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम को सीखने सिखाने का सिलसिला दौरे सहाबा तक ही मेहदूद न रहा बल्कि बाद के बुज़ुर्गाने दीन ने भी इस कारे ख़ैर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन में हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान अ़ब्दुल्लाह बिन हबीब सुलमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शख़्सिय्यत बड़ी नुमायां है, आप तालीमो तअ़ल्लुम (पढ़ने पढ़ाने) में इन्तिहाई माहिर थे, अपने दौर में हर आ़मो ख़ास के उस्ताज़ थे।[2] आप के मुतअ़ल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ सबीई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने

[1] ..... شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی قراءۃ القرآن...الخ، ۲/۴۲۹، حدیث: ۲۲۹۸

[2] ..... حلیۃ الاولیاء، ۲۶۹-ابو عبد الرحمن السلمی، ۴/۲۱۳، رقم: ۵۲۸۹ بتقدم وتاخر

40 साल तक मस्जिद में कुरआने करीम पढ़ाया।[1] इस क़दर ख़िदमते कुरआन की वज्ह बयान करते हुवे खुद इरशाद फ़रमाते हैं कि एक **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे मस्जिद में कुरआने पाक पढ़ाने के लिए बिठा रखा है[2] और वोह फ़रमाने आ़लीशान येह है : خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ[3] यानी तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।

येही है आरज़ू तालीमे कुरआं आ़म हो जाए

तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूरे ग़ौसे पाक कुरआने करीम पढ़ाया करते

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दोपहर से पेहले और बाद दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह्व, जबकि ज़ोहर के बाद क़िराअतों के साथ कुरआने करीम पढ़ाया करते थे।[4]

फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मादान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : कुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने वाले के लिए सूरत ख़त्म होने तक फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रेहते हैं, इस लिए जब तुम में से कोई (दिन के

[1] ..... حلية الاولياء، ۲۶۹-ابو عبد الرحمن السلمی، ۴/۲۱۳، رقم: ۵۲۸۹

[2] ..... فیض القدیر، حرف الخاء، ۳/۶۱۸، تحت الحدیث: ۳۹۸۳ مفهوماً

[3] ..... بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم من تعلم القرآن و علمه، ص ۱۲۹۹، حدیث: ۵۰۲۷

[4] .....غ़ौसे पाक के ह़ालात, स. 27 ब ह़वाला بهجة الاسرار، ذكر علمه وتسمية بعض شيوخه، ص ۲۲۵

आग़ाज़ में कोई) सूरत पढ़े तो उस की दो आयतें छोड़ दे और दिन के आख़िरी हिस्से में उसे ख़त्म करे ताकि दिन के शुरूअ़ से आख़िर तक पढ़ने पढ़ाने वाले के लिए फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहें।[1]

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारे अस्लाफ़ नेकी की दावत के अ़ज़ीम जज़्बे से सरशार थे, इस ज़िम्न में मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तालीमे क़ुरआन पर उभारने वाली इनफ़िरादी कोशिश पर मब्नी ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

गुलूकार (Singer) इमाम बन गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक रोज़ कूफ़े के मुज़ाफ़ात (यानी आस पास की बस्तियों) से गुज़र रहे थे कि उन का गुज़र फ़ासिक़ीन के एक गिरोह पर हुवा, जिन के पास ज़ाज़ान नामी मश्हूर गवय्या (यानी गुलूकार) निहायत ही सुरीली आवाज़ में गा रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : कितनी ख़ूब सूरत आवाज़ है ! काश ! येह क़ुरआने करीम की तिलावत में इस्तेमाल होती। येह फ़रमा कर आप ने अपनी चादर सर पर डाली और तशरीफ़ ले गए। ज़ाज़ान ने लोगों से पूछा : येह कौन साह़िब थे ? उन्हों ने जब बताया कि येह मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

[1] ..... دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فضل من قرا القرآن، ص ۱۰۱۳، حدیث: ۳۳۱۹

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 102

थे, तो पूछने लगा : येह क्या फ़रमा रहे थे ? चुनान्चे, जब उसे बताया गया कि वोह फ़रमा रहे थे : **कितनी ख़ूब सूरत आवाज़ है ! काश ! येह कुरआने करीम की तिलावत में इस्तेमाल होती ।** तो येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, फिर उठ कर बाजा ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा और रोता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया, आप ने उस को गले से लगा लिया और ख़ुद भी रोने लगे, फिर इरशाद फ़रमाया : जिस ने **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत की मैं उस से क्यूं मह़ब्बत न करूं ! यूं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इनफ़िरादी कोशिश व नेकी की दावत की बरकत से एक गुलूकार (Singer) को सच्ची तौबा की सआ़दत नसीब हुई, जिस की बदौलत उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत इख़्तियार की और कुरआने पाक की तालीम ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गए यहां तक कि मुकम्मल कुरआने पाक सीख लिया और उ़लूमे इस्लामिय्या में ऐसा कमाल ह़ासिल किया कि बहुत बड़े इमाम बन गए ।[1]

अल्लाह पाक की उन पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इ़बादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल
रजब का वासित़ा देता हूं फ़रमा दे करम मौला[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] ..... غنیۃ، المجلس فی قولہ تعالٰی: وتوبوا الی اللہ... الخ، الجزء الاول، ص ۲۶۳

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 98

तालीमे क़ुरआन और हमारी हालते ज़ार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ में किस क़दर ख़िदमते क़ुरआने करीम का जज़्बा कार फ़रमा था, शबो रोज़ ख़िदमते क़ुरआने पाक की बरकत से उन की मुअ़त्तर रूहें दूसरों के सीनों को मेहकाया करतीं और उन के रौशन दिल दूसरों के दिलों में इ़ल्म की शम्अ़ जलाया करते, वोह अपनी क़ुव्वते ईमानी की वज्ह से चैन व इत़्मीनान के साथ ज़िन्दगियां गुज़ारा करते, कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾

(پ۱۳، الرعد: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सुन लो* ***अल्लाह*** *की याद ही में दिलों का चैन है।*

वोह लोग क़ुरआने पाक पर अ़मल की बरकत से हिदायत याफ़्ता और हिदायत देने वाले थे, चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

فَاِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ مِّنِّیْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَایَ فَلَا یَضِلُّ وَ لَا یَشْقٰى ﴿۱۲۳﴾

(پ۱۶، طٰہٰ: ۱۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर अगर तुम सब को मेरी त़रफ़ से हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरू हुवा वोह न बेहके न बदबख़्त हो।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने पाक और उस की तालीमात से कोसों दूर होने की वज्ह से आज के मुसलमान की रूह परागन्दा है तो दिल गुनाहों की नुहूसत से सियाह और ज़ेहन मुन्तशिर है, बल्कि उन की तो ज़िन्दगियां भी इन्तिहाई बे

चैनी व परेशानी का शिकार हैं। मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर में सिरातुल जिनान जिल्द 6 सफ़हा 258 पर है : इस उम्मत के लोगों का कुरआने करीम में दिए गए अहकामात पर अमल करना और सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत करना उन्हें दुन्या में गुमराही से बचाएगा और आख़िरत में बद बख़्ती से नजात दिलाएगा, लेहाज़ा हर एक को चाहिए कि वोह कुरआने करीम की पैरवी करे और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ करे ताकि वोह गुमराह और बद बख़्त होने से बच जाए। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

वोह ज़माने में मुअ़ज़्ज़ज़ थे मुसलमां हो कर
और तुम ख़्वार हुवे तारिके कुरआं हो कर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़िदमते कुरआने पाक और दावते इस्लामी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैख़े तरीक़त, अमीरे एहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा है, आप ने अपनी ज़िन्दगी इस्लाहे उम्मत के लिए वक़्फ़ कर रखी है, आप की बनाई हुई **आशिक़ाने रसूल की मदनी तेहरीक दावते इस्लामी** में ख़िदमते कुरआने करीम को अव्वलीन तरजीह हासिल है जैसा कि दावते इस्लामी के तआरुफ़ी नाम को ही देखें तो इस में तब्लीगे कुरआन मुक़द्दम है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस वक़्त दावते इस्लामी मुल्को बैरूने मुल्क मुतअ़द्दद शोबाजात के ज़रीए ख़िदमते कुरआने करीम में सरगर्मे

अ़मल है। **दुन्या भर** में तालीमे कुरआन आ़म करने के लिए बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिए दावते इस्लामी का एक अहम शोबा **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** और **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात**[1] भी है, इस के तह़्त हज़ारों मद्रसतुल मदीना क़ाइम हैं, तादमे तेह़रीर (रजबुल मुरज्जब 1438 हिजरी) मुल्को बैरूने मुल्क **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की तादाद कमोबेश 12500 (12 हज़ार 5 सौ) है। पिछले 14 माह में कमो बेश 3611 इस्लामी भाई नाज़िरा कुरआने करीम मुकम्मल कर चुके हैं, जबकि मदनी क़ाइ़दा मुकम्मल करने वालों की तादाद कमो बेश 7236 है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुरआन सीखने वालों के लिए ख़ुश ख़बरी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! मद्रसतुल मदीना बालिग़ान चूंकि दावते इस्लामी के ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम है और इस में बालिग़ इस्लामी भाइयों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ मदनी क़ाइ़दा व कुरआने पाक पढ़ना सिखाने के साथ साथ नमाज़ के अह़काम से वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़, नमाज़े जनाज़ा और सुन्नतें व आदाब, मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत), फ़र्ज़ उ़लूम, रोज़ मर्रा की दुआ़एं, मदनी

[1] ....दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्लामी बहनों में भी मदनी काम करने के लिए एक मुकम्मल निज़ाम है, चुनान्चे, इस्लामी भाइयों के 12 मदनी कामों की त़रह़ इस्लामी बहनों के 8 मदनी काम हैं, इन में से एक मदनी काम मद्रसतुल मदीना बालिग़ात भी है, जिस में बा पर्दा मक़ाम पर बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने पाक पढ़ना सिखाया जाता है।

इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब, ग़ौरो फ़िक्र और इख़्तितामे मजलिस की दुआ़ वग़ैरा का सिलसिला होता है । लेहाज़ा इस में क़ुरआने करीम सीखने वालों के लिए इस से बढ़ कर ख़ुश ख़बरी क्या हो सकती है कि अगर दुन्या में वोह मुकम्मल क़ुरआने करीम सीख न पाएं तो मरने के बाद क़ब्र में उन्हें क़ुरआने करीम सिखाया जाएगा । जैसा कि मश्हूर ताबेई़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़िय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे येह बात मालूम हुई है कि जब बन्दए मोमिन मरता है और वोह (चाहने के बा वुजूद) किताबुल्लाह न सीख पाए तो **अल्लाह** पाक उसे क़ब्र में सिखाता है ह़त्ताकि **अल्लाह** पाक इस पर उसे सवाब भी अ़त़ा फ़रमाता है ।[1] इसी त़रह़ एक और ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी फ़रमाते हैं कि मुझे येह बात किसी ने (यूं) बताई कि जब मोमिन जहाने फ़ानी से कूच करता है और क़ुरआन का कुछ ह़िस्सा याद करने से मेह़रूम रेह जाता है तो **अल्लाह** पाक उस पर फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसे क़ुरआने करीम याद करवाते हैं ह़त्ताकि कल बरोज़े क़ियामत वोह ह़ाफ़िज़ उठाया जाएगा ।[2]

दुरुस्त क़ुरआने पाक पढ़ने का शरई हुक्म

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम अ़रबी ज़बान (Arabic Language) में अ़रबी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा । रसूले अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे अ़रबी लबो लेहजे में पढ़ने का हुक्म कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : اِقْرَؤُوا الْقُرْاٰنَ بِلُحُوْنِ الْعَرَب

[1] ..... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، اتمام تعليم المؤمن... الخ، ۵/۴۹۰، حديث: ۲۹۴

[2] ..... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، اتمام تعليم المؤمن... الخ، ۵/۴۹۰، حديث: ۲۹۵

यानी कुरआन को अ़रबी लबो लेहजे में पढ़ो ।[1] मगर बद क़िस्मती ! मख़ारिज की दुरुस्ती के साथ अ़रबी लबो लेहजे में अब कुरआने करीम पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं । (ح और ه) (ظ، ز، ذ और ض), (س، ث और ص) और (ع और ء) में फ़र्क़ कर के पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं । याद रखिए ! दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआन पढ़ना फ़र्ज़ है, लह्‌ने जली (यानी ह़र्फ़ को ह़र्फ़ से बदलने की वज्ह) से अगर माना फ़ासिद हो जाएं तो नमाज़ भी फ़ासिद हो जाती है । चुनान्चे, येही वज्ह है कि वोह इस्लामी भाई जो दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ना नहीं जानते, उन्हें **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के तह़्त दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने का एहतिमाम किया जाता है ।

किस क़दर कुरआने पाक सीखना ज़रूरी है ?

हम सब पर दिन भर में 5 नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और हर नमाज़ में चूंकि क़िराअते कुरआन भी फ़र्ज़ है । लेहाज़ा इस क़दर कुरआने पाक याद करना लाज़िम व ज़रूरी है जिस से नमाज़ में फ़रीज़ए क़िराअत को अह़सन अन्दाज़ से अदा किया जा सके, चुनान्चे इस के लिए कितना कुरआन याद होना ज़रूरी है, इस के मुतअ़ल्लिक़ फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मुस्तनद किताब **बहारे शरीअ़त** में है : एक आयत का ह़िफ़्ज़ (ज़बानी याद) करना हर मुसलमान मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़े ऐन है और पूरे कुरआने करीम का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया और सूरए फ़ातिह़ा और एक दूसरी

[1] .... نوادر الاصول، الاصل الثالث والخمسون والمائتان فی ان القرآن مثله...الخ، ۲/۲۴۲

छोटी सूरत या इस के मिस्ल, मसलन तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का हिफ़्ज़, वाजिबे ऐन है।[1]

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के 7 मदनी मक़ासिद

﴾1﴿ इस्लामी भाइयों को दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना सिखाना।

﴾2﴿ पढ़ने वालों को ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े रसूल का पैकर, शरीअ़ते मुत़ह्हरा का पाबन्द और सुन्नतों पर अ़मल करने वाला मुबल्लिग़ बनाने की कोशिश करना।

﴾3﴿ मदनी कामों की ज़िम्मेदारी दे कर इन्हें भी मस्जिद भरो तेह़रीक "**दावते इस्लामी**" का हिस्सा बना कर उस अ़लाक़े में **नेकी की दावत** की धूमें मचाना।

﴾4﴿ नमाज़ सिखाना और दुआ़एं वग़ैरा याद करवाना।

﴾5﴿ किताब "**नमाज़ के अह़काम**" से ज़रूरी मसाइल सिखाना।

﴾6﴿ मज़ीद इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और दीने मतीन की ख़िदमत करने का जज़्बा बेदार करना।

﴾7﴿ अख़्लाक़ी तरबियत करना।

येही है आरज़ू तालीमे क़ुरआन आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1].....बहारे शरीअत, क़ुरआने मजीद पढ़ने का बयान, 1/545

ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، فصل فی القراءۃ، مطلب: السنۃ تکون سنۃ عین... الخ، ۲/۳۱۵

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की मदनी बहारें

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बे शुमार मदनी बहारें हैं, अगर देखा जाए तो येही बहुत बड़ी मदनी बहार है कि इस के तह़त हज़ारहा ऐसे ख़ुश नसीब मुसलमान हैं जो दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ने के साथ साथ दूसरों को पढ़ा रहे हैं, इस के इलावा भी त़रह़ त़रह़ की मदनी बहारें देखने / सुनने को मिलती हैं, कई आ़शिक़ाने रसूल **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में आए और दावते इस्लामी की अहम ज़िम्मेदारियों पर फ़ाइज़ हो कर ख़िदमते दीन में मसरूफ़ हैं। कई इमामत के आला मन्सब पर फ़ाइज़ हैं, कई ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा के उस्ताज़ हैं, कई आ़लिम बन कर इल्मे दीन फैलाने में मसरूफ़ हैं, आइए इसी बारे में एक बड़ी ही प्यारी मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के त़ालिबे इल्म मुफ़्ती कैसे बने ?

मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा अ़त्तारी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی के बयान का ख़ुलासा है कि मैं ने 14 साल की उ़म्र में मेट्रिक पास किया और मज़ीद तालीम के लिए कॉलेज जा पहुंचा। मेरा अक्सर वक़्त आ़म नौजवानों की त़रह़ दोस्तों के साथ गपशप लड़ाते या क्रिकेट वग़ैरा खेलने में गुज़रता। हमारे अ़लाक़े में सब्ज़ इमामा और सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आ़शिक़े रसूल अक्सर बड़ी मह़ब्बत से मिलते और आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तेह़रीक **दावते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकतें बताते और मुझे भी येह माह़ोल अपनाने की तरग़ीब देते। मैं उन के मह़ब्बत भरे मदनी अन्दाज़ से मुतास्सिर तो बहुत था मगर त़वील अ़र्से तक कोई पेश क़दमी न कर पाया। बिल आख़िर

मैं उन की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मस्जिद में बाद नमाज़े इशा क़ाइम किए जाने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत करने लगा। मैं जिस्मानी तौ़र पर कमज़ोर होने की वज्ह से अपनी अस्ल उ़म्र से बहुत छोटा दिखाई देता था, इस लिए मुझे अलग से बिठा कर पढ़ाया जाता। इसी वज्ह से एक बार मुझे मद्रसे में पढ़ाने से माज़िरत भी कर ली गई। क्यूंकि वहां बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों की तरकीब थी। मगर मैं ने हिम्मत न हारी और दोबारा दाख़िले की कोशिश करता रहा। मेरे जज़्बे को देखते हुवे मुझे दोबारा दाख़िला दे दिया गया और बिल आख़िर मैं आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना सीख गया।

اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी मिला। जल्द ही मैं सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद हो कर अ़त्तारी बन गया। फिर कमो बेश 8 साल **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में क़ुरआने पाक सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ाने की सआ़दत पाता रहा। इस दौरान मैं ने दावते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम होने वाले इजतिमाई एतिकाफ़ में भी शिर्कत की और नेकियों की मज़ीद रग़बत पाई। सिन 1996 ईसवी में दर्से निज़ामी में दाख़िला ले कर सिन 2003 ईसवी में फ़ारिग़ुत्तेह़सील हुवा। इस दौरान फ़तावा नवेशी की भी तरबियत ले चुका था। पीरो मुर्शिद की शफ़्क़त से मजलिसे तेह़क़ीक़ाते शरइ़य्या के रुक्न की ह़ैसिय्यत से अपने फ़राइज़ अन्जाम देने के साथ साथ दारुल

इफ़्ता एह्ले सुन्नत में ता दमे तेह़रीर बत़ौरे **मुफ़्ती व मुसद्दिक़** ख़िदमते इफ़्ता की सआ़दत ह़ासिल है ।[1]

मक़्बूल जहां भर में हो दावते इस्लामी सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का[2]

अल्लाह पाक की अमीरे एह्ले सुन्नत पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का" के 29 हुरूफ़ की निस्बत से मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के 29 मदनी फूल

फ़रमाने अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ : काश ! हर वोह इस्लामी भाई जो सह़ीह़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जानता है, वोह दूसरे इस्लामी भाइयों को सिखाना शुरूअ़ कर दे तो हर त़रफ़ तालीमे क़ुरआन की बहार आ जाएगी और सीखने सिखाने वालों के लिए सवाब का अम्बार लग जाएगा ।[3] اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

﴿1﴾ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।[4] इस लिए मजलिसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का हर ज़िम्मेदार अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा **72 मदनी इन्आ़मात** में से **मदनी इन्आ़म**

1....फ़ैज़ाने अमीरे एह्ले सुन्नत, स. 26
2....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 180
3....नमाज़ के अह़काम, स. 212 मुल्तक़त़न ।
4..... معجم کبیر، یحیی بن قیس الکندی عن ابی حازم، ۳/۵۲۵، حدیث: ۵۸۰۹

नम्बर 1 पर अ़मल करते हुवे येह निय्यत करता रहे : मैं **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिए दावते इस्लामी की मजलिस **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ करूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴿2﴾ **मजलिस मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का मदनी काम हर ज़ैली ह़ल्क़े / मसाजिदे एह्ले सुन्नत, घर (जहां मस्जिद में मुमकिन न हो वहां किसी इस्लामी भाई की बैठक (ड्रोइंग रूम)) दुकान / दफ़्तर / फेक्ट्री वग़ैरा में बालिग़ान के लिए रोज़ाना किसी भी नमाज़ के बाद या किसी भी वक़्ते मुनासिब पर (जिस में पढ़ने वालों को आसानी हो) तक़रीबन 63 मिनट[1] **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** क़ाइम कर के तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तेह़रीक दावते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को आ़म करना और उन्हें दावते इस्लामी से वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ '' के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है ।

﴿3﴾ मजलिसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** मस्जिद के ह़ुजरे, मक्तब वग़ैरा में नहीं बल्कि मस्जिद के हॉल या सद्र दरवाज़े के क़रीब लगाएं ताकि देखने वालों को इस में पढ़ने की एक ख़ामोश तरग़ीब होती रहे, अगर मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की इजाज़त न मिल रही हो या शिफ़्ट (*Shift*) करने का कहा जा रहा हो तो हरगिज़ मस्जिद इन्तिज़ामिया

1 .....बैरूने मुल्क **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का दौरानिया 41 मिनट है ।

की ग़ीबत व मुख़ालफ़त न करें बल्कि सब इस्लामी भाई मिल कर दो रक्अ़त सलातुल ह़ाजात अदा करें और **अल्लाह** पाक की बारगाह में गिड़गिड़ा कर दुआ़ करें ।

﴾4﴿ अगर मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की इजाज़त न मिले तो किसी घर / दुकान / फ़ेक्ट्री वग़ैरा में नुमायां त़ौर पर **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** क़ाइम करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब फ़वाइद ह़ासिल होंगे ।

﴾5﴿ मुदर्रिस रोज़ाना इस्लामी भाइयों की ह़ाज़िरी लें और उन का नाम, मुकम्मल पता, राबित़ा नम्बर भी रजिस्टर / डायरी में दर्ज करें ।

﴾6﴿ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का मुदर्रिस और शुरका रोज़ाना वक़्त पर ह़ाज़िर हों, जो इस्लामी भाई वक़्त पर न आए, मुदर्रिस उन को नर्मी व शफ़्क़त से वक़्त पर आने की तरग़ीब दिलाएं । (मुदर्रिस के लिए वक़्त की पाबन्दी बेह़द ज़रूरी है, याद रहे ! **तरग़ीब दिलाने के लिए सरापा तरग़ीब बनना पड़ता है ।**)

﴾7﴿ जिस मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** क़ाइम है, मुदर्रिसीन उस मस्जिद की सफ़े अव्वल में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़े बा जमाअ़त अदा कर के **मदनी दर्स** (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत) के फ़ौरन बाद **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का आग़ाज़ करें । मदनी क़ाइदा / क़ुरआने पाक पढ़ाने के साथ साथ बक़िय्या मुआ़मलात की **त़ै शुदा जदवल** के मुत़ाबिक़ ही तरकीब की जाए ।

﴾8﴿ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में जिन इस्लामी भाइयों का हफ़्तावार इजतिमाअ़ व मदनी क़ाफ़िले में शिर्कत का ज़ेह्न बन जाए, उन इस्लामी

भाइयों को भी अपने साथ हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कराएं।

﴾9﴿ उस्ताज़ और मेरा शागिर्द केहने / केहलवाने वाला माहोल न बनाएं बल्कि सब के सब इस्लामी भाई बन कर रहें और तालीमे क़ुरआन के सिलसिले को आ़म करें। पढ़ाने वाला (मुदर्रिस) बरतर बनने के बजाए, नेक निय्यती के साथ आ़जिज़ी का बाज़ू बिछाए और पढ़ने वालों के साथ नर्मी व शफ़्क़त करे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जल्द तर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। जो भी इस्लामी भाई **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में आए, मुदर्रिस उस से ऐसे हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आए कि वोह यहीं का हो के रेह जाए। अगर पढ़ने वाला आना छोड़ दे तो मुदर्रिस ख़ुद / किसी के ज़रीए़ उस पर इनफ़िरादी कोशिश करे, 1 या 2 बार, बल्कि 100 बार भी ज़रूरत पड़े तो उस को बुलाए।

﴾10﴿ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का माहोल इन्तिहाई सन्जीदा रखें, मज़ाक़ मस्ख़री और ग़ैर सन्जीदगी बेहद नुक़्सान का बाइ़स बन सकती है।

﴾11﴿ ट्यूब लाइट्स / बल्ब / एनर्जी सेवर / पंखे वग़ैरा ह़स्बे ज़रूरत ही इस्तेमाल करें, मसलन एक पंखे और एक बल्ब / ट्यूब लाइट / एनर्जी सेवर से काम चल सकता हो तो दो न चलाएं और जाते वक़्त लाज़िमी बन्द कर दें, जाते वक़्त डेस्क वग़ैरा मख़्सूस जगह पर रख दें और दरियां / चटाइयां वग़ैरा भी ज़रूर समेट दें।

﴾12﴿ शुरका को रोज़ाना कम अज़ कम **1 घन्टा 12 मिनट** मदनी चैनल देखने का ज़ेहन दें।

﴾13﴿ रोज़ाना पढ़ने / पढ़ाने के बाद बाहर बा रौनक़ मक़ाम पर चौक दर्स का जदवल बनाएं नीज़ हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरे का भी जदवल बनाएं, बयान के बाद इनफ़िरादी कोशिश व मुलाक़ात में **3 दिन / 12 दिन और एक माह** के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों के नाम लिखें और **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ने के लिए तरग़ीब भी दिलाएं।

﴾14﴿ हफ़्ते में (*Weekly*) एक दिन (सनीचर को मदनी मुज़ाकरा होता ही है, इस लिए येह मख़्सूस न किया जाए) सबक़ के बाद **हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़े** (मस्जिद और फ़िनाए मस्जिद के इ़लावा) की तरकीब बनाएं, जिस में शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान / मदनी मुज़ाकरा और मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा **सुन्नतों भरे बयानात** कि *VCDS* चलाएं। (याद रहे ! इस दिन भी सबक़ की छुट्टी नहीं होनी चाहिए, अगर मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के **वक़्त में हफ़्तावार** बराहे रास्त (*Live*) मदनी मुज़ाकरा हो तो उस का जदवल बनाया जाए।)[1]

﴾15﴿ जिस मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** हो उस के इन्तिज़ामात वग़ैरा में मस्जिद इन्तिज़ामिया का हाथ बटाएं, इन्दज़्ज़रूरत शुरका में से जो अह्ल हों उन्हें मस्जिद इन्तिज़ामिया की रुकनिय्यत वग़ैरा के लिए पेश करें और मस्जिद की ख़िदमत कर के दोनों हाथों से सवाब लूटें।

﴾16﴿ मस्जिद इन्तिज़ामिया की त़रफ़ से होने वाली दुरूद ख़्वानी, ईसाले

1 .....अगर मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद के इ़लावा बात न बने तो ऑडियो में सुना जाए।

सवाब के इजतिमाआ़त और बड़ी रात की महाफ़िल वग़ैरा में शिर्कत की सआ़दत हासिल करें। ख़तीबो इमाम व मुअज़्ज़िन साहिबान की ख़िदमत करें (मदनी इन्आ़म नम्बर 62 : क्या आप ने इस माह किसी सुन्नी आ़लिम (या इमामे मस्जिद, मुअज़्ज़िन, ख़ादिम) को **112** रुपै या कम अज़ कम 12 रुपै तोहफ़न पेश किए ? ना बालिग़ अपनी ज़ाती रक़म नहीं दे सकता) उन के हुक्म पर इन्दज़्ज़रूरत अहल इस्लामी भाई अज़ानो इक़ामत की सआ़दत हासिल करें।

﴾17﴿ पढ़ने वालों को हर हफ़्ते कम अज़ कम एक नए इस्लामी भाई को लाने की तदबीर व हिक्मत से तरग़ीब दिलाई जाए नीज़ तमाम इस्लामी भाइयों को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत का ज़ेहन भी दिया जाए।

﴾18﴿ पढ़ने और पढ़ाने वाले रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए उ़म्र भर में यक्मुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर माह कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुताबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र भी करते रहें। इजतिमाई ग़ौरो फ़िक्र मुदर्रिस ख़ुद करवाएं और दरजे में मदनी इन्आ़मात और मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार का तक़र्रुर भी करें तो मदीना मदीना।[1]

[1].....बारहवीं शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, शबे मेराज, शबे बराअत, शबे क़द्र और दावते इस्लामी के तह़त होने वाले मर्कज़ी इजतिमाआ़त में भी शिर्कत लाज़िमी करें और दूसरों को भी साथ ले कर जाएं।

﴾19﴿ **मदनी क़ाफ़िला, मदनी इन्आ़मात, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के माहाना अहदाफ़ :** मजलिस के हर सत्ह़ के ज़िम्मेदारान अपने निगराने मुशावरत के मश्वरे से मदनी क़ाफ़िलों, मदनी इन्आ़मात, 26 दिन के **12 मदनी काम कोर्स,** 12 दिन के **इस्लाहे आमाल कोर्स** और 7 दिन के **फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स** के माहाना अहदाफ़ तै़ करें और इस के लिए भरपूर कोशिश भी फ़रमाएं ।

जद्वल (schedule)

#	पीरियड	वक़्त	तफ़्सीलात
1	सबक़	26 मिनट	कुरआने करीम / मदनी क़ाइ़दा क़वाइ़द व मख़ारिज के मुताबिक़ सबक़ देना, सुनना मज़ीद मालूमात के लिए रेहनुमाए मुदर्रिसीन से मदद लें ।
2	नमाज़ के अह़काम	05 मिनट	नमाज़, ग़ुस्ल, वुज़ू, नमाज़े जनाज़ा, सुन्नतें वग़ैरा सिखाने का जदवल बनाएं ।
3	मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत)	05 मिनट	दर्स का त़रीक़ा, दर्स के मदनी फूल, तरबियत के बाद मद्रसे में नए इस्लामी भाइयों से दर्स दिलवाएं ।
4	फ़र्ज़ उ़लूम	19 मिनट	"फ़र्ज़ उ़लूम" ऑडियो (Audio) या मेमोरी कार्ड (Memory Card) के ज़रीए सीखने की तरतीब के साथ कोशिश कीजिए । (एक बयान मुकम्मल सुन कर फिर दूसरा सुना जाए ।)
5	दुआ़	3 मिनट	रोज़ मर्रा की दुआ़एं (रोज़ाना एक दुआ़ याद करवाएं ।)
6	ग़ौरो फ़िक्र	05 मिनट	रोज़ाना एक मदनी इन्आ़म की तरग़ीब व रिसाला पुर करे और मजलिस के इख़्तिताम की दुआ़

तक्मीले मदनी क़ाइ़दा : **92 दिन ता 126 दिन** / तक्मीले कुरआने करीम (नाज़िरा) **12 माह ता 19 माह** / शुरका की तादाद : कम अज़ कम **19** इस्लामी भाई

﴾20﴿ ज़िम्मेदारान की तक़र्रुरी

#	सत्ह़	ज़िम्मेदार	#	सत्ह़	ज़िम्मेदार
1	ज़ैली ह़ल्क़ा	मुदर्रिस	4	ज़ोन	ज़ोन ज़िम्मेदार मजलिसे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)
2	डिवीज़न	डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिस मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)	5	रीजन	रीजन ज़िम्मेदार मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)
3	काबीना	काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)	6	मुल्क	निगराने मजलिस मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)
	रुक्ने शूरा	मजलिसे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)			

❁ रीजन ज़िम्मेदारान मुल्क सत्ह़ की मजलिस के रुक्न हैं, इसी मजलिस में से एक मदनी इन्आ़मात, एक मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार और एक कारकर्दगी ज़िम्मेदार होंगे ❁ बैरूने मुल्क के ज़िम्मेदारान, निगराने मजलिस बैरूने मुल्क (रुक्ने शूरा) की इजाज़त से इस शोबे में किसी भी सत्ह़ पर ज़िम्मेदार मुक़र्रर करें। याद रहे ! किसी भी सत्ह़ के अराकीन व निगरान की तक़र्रुरी के लिए मुतअ़ल्लिक़ा सत्ह़ के निगरान की इजाज़त ज़रूरी है। (अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर मजलिस में मदनी इस्लामी भाई के होने को पसन्द फ़रमाते हैं) किसी भी सत्ह़ पर ज़िम्मेदार उसे मुक़र्रर करें जो क़ुरआने पाक को कम अज़ कम नाज़िरा दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ना जानता हो, अगर ह़ाफ़िज़े क़ुरआन हो तो मदीना मदीना।

वज़ाहत : रुक्ने शूरा / निगराने मजलिस, मुल्क सत्ह़ की मजलिस का हर माह बिल मुशाफ़ा मदनी मश्वरा फ़रमाएं। (वज़ाह़त : शोबाजात में रीजन के बाद निगराने मजलिस के माहाना मदनी मश्वरे की पॉलीसी तब्दील हुई है।)

❁ मामूल (Routine) से हट कर होने वाले शोबाजात के मदनी मश्वरों या 2 / 3 दिन के तरबियती इजतिमाआ़त के लिए अव्वलन **"इजाज़त नामा"** मुकम्मल पुर कर के तै़ शुदा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होगा। (मज़ीद वज़ाह़त के लिए **"इजाज़त नामा बराए मदनी मश्वरा या तरबियती इजतिमाअ़"** के मदनी फूल बग़ौर मुलाह़ज़ा कर लीजिए, येह इजाज़त नामा मुल्क इन्तिज़ामी काबीना दफ़्तर से ब वक़्ते ज़रूरत ह़ासिल किया जा सकता है)

❁ कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें :

डिवीज़न : 2 / काबीना : 3 / ज़ोन : 5 / रीजन : 6 / मुल्क : 7

﴾21﴿ मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिए मुक़र्रर कर्दा सत्ह़ के इलावा किसी और सत्ह़ का मदनी मश्वरा लेने के लिए मुतअ़ल्लिक़ा निगरान से इजाज़त ज़रूरी है / जब बड़ी सत्ह़ के ज़िम्मेदार दीगर सत्ह़ के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना मदनी मश्वरा नहीं होगा (मसलन : काबीना ज़िम्मेदार ने निगराने काबीना की इजाज़त से डिवीज़न ज़िम्मेदारान के साथ साथ अ़लाक़ा ज़िम्मेदारान का भी मदनी मश्वरा लिया तो अब डिवीज़न

ज़िम्मेदारान उस माह अ़लाक़ा ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा नहीं करेंगे) / इसी त़रह़ जिस माह निगराने काबीना / मुशावरत शोबे के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा फ़रमाएंगे, उस माह भी शोबा ज़िम्मेदारान माहाना मदनी मश्वरा नहीं करेंगे। (शोबे के मदनी काम को मज़बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अपने निगराने मुशावरत से शोबे के इस्लामी भाइयों का मश्वरा करवाना मुफ़ीद है।)

﴾23﴿ मुल्क / बैरूने मुल्क सत़ह़ के ज़िम्मेदार हर ईसवी माह की 7 तारीख़ तक कारकर्दगी मुल्क इन्तिज़ामी काबीना / मजलिसे बैरूने मुल्क दफ़्तर और मुतअ़ल्लिक़ा निगराने ममालिक को मेल कर दें। (याद रहे ! कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मश्रूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपने निगरान को कारकर्दगी पेश कर दें)

﴾24﴿ डिवीज़न ता काबीना ज़िम्मेदार हर माह का पेशगी जदवल ईसवी माह की **19** तारीख़ तक अपने निगरान (मुशावरत / निगराने काबीना) से मन्ज़ूर करवाए, फिर इस के मुत़ाबिक़ पेशगी इत्तिलाअ़ के साथ अपने जदवल पर अ़मल करे और महीना मुकम्मल होने के बाद 3 तारीख़ तक कारकर्दगी जदवल अपने निगरान (मुशावरत / निगराने काबीना) और ज़िम्मेदार को पेश करे।

﴾25﴿ अपने निगरान की मुशावरत से शोबा ज़िम्मेदारान मंगल के रोज़ तेह़रीरी काम किया करें।

﴾26﴿ अपने निगराने मुशावरत से मरबूत़ (यानी राबित़े में) रहें, उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करते रहें, जो निगरान से जितना ज़्यादा मरबूत़ रहेगा, वोह उतना ही मज़बूत़ होता जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾27﴿ अपने निगराने ममालिक और निगराने काबीना / निगराने मुल्की मुशावरत की इजाज़त से वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिस के तरबियती इजतिमाअ़ भी करते रहें ताकि पुराने इस्लामी भाइयों की भी मदनी माहोल में वाबस्तगी के साथ साथ मदनी कामों में शुमूलिय्यत और नए इस्लामी भाइयों की मदनी तरबियत का सामान होता रहे।

﴾28﴿ याद रहे कि अपने निगराने मजलिस बैरूने मुल्क की मुशावरत से ज़रूरतन इन मदनी फूलों में तब्दीली कर सकते हैं।

﴾29﴿ **हफ़्तावार इजतिमाअ़ में भी 63 मिनट** के लिए **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का जदवल बनाया जाए, नीज़ हफ़्तावार ताती़ल के दिन ऐसे इस्लामी भाई जो रोज़ाना नहीं आ सकते, उन के लिए हफ़्तावार **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का जदवल भी बनाया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में त़लबा की तादाद बढ़ाने का नुस्ख़ा

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वालों की तादाद बढ़ाने के लिए इन बातों पर अ़मल करना बहुत मुफ़ीद है :

(1) पढ़ाने वाला शुरकाए **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की तादाद (12 ता 19) को पूरा करने की भरपूर कोशिश करे कि येह उस की ज़िम्मेदारी में भी शामिल है।

(2) पढ़ने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश की जाए कि वोह अपने साथ कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को तय्यार कर के ज़रूर लाएं।

(3) पढ़ाने वाला इतना तजरिबा कार, ख़ुश अख़्लाक़, नर्म मिज़ाज और मुस्कुराते चेहरे वाला हो कि उस की ख़ुश अख़्लाक़ी और तालीमी मेयार से मुतास्सिर हो कर पढ़ने वाले पेहले ख़ुद पाबन्दी इख़्तियार करें और फिर दूसरों को भी लाना शुरूअ़ कर दें कि जिस दुकान से अच्छी व मेयारी अश्या मिलें, उस के ख़रीदार बढ़ते जाते हैं और फिर वोही लोग आगे मज़ीद तशहीर का बाइस भी बनते हैं।

(4) पढ़ाने वाला हिक्मते अ़मली से काम ले और पढ़ने वालों के अस्बाक़ ह़स्बे मौक़अ़ आगे भी बढ़ाए, सिर्फ़ मख़ारिज की दुरुस्ती पर ही न लगा रहे, बल्कि हुरूफ़ की अदाएगी में रेह जाने वाली कमी को दूर करने की कोशिश करे, ताकि पढ़ने वाले हुरूफ़े मुफ़रिदात की अदाएगी कर के दिल बरदाश्ता न हो जाएं कि उन से येह काम नहीं हो सकता।

(5) जिस ज़ैली ह़ल्क़े में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगता है उस ज़ैली ह़ल्क़े में ज़ैली मुशावरत के निगरान, ह़ल्क़ा मुशावरत के निगरान, अ़लाक़ा मुशावरत के निगरान या उसी ज़ैली ह़ल्क़े के अन्दर जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना किसी शोबे के इस्लामी भाई मौजूद हैं, काबीना / ज़ोन सत्ह़ का या रुक्ने शूरा है, उन से अ़र्ज़ करें कि आप हमारे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में तशरीफ़ लाएं। फिर उन के ज़रीए पढ़ने वालों की ह़ौसला अफ़ज़ाई के लिए मदनी तह़ाइफ़ (रिसाला, तस्बीह़, इत्र, मिस्वाक वग़ैरा) दिलाने की कोशिश करें।

(6) हफ़्ते में एक दिन ख़ास इसी मक़्सद के लिए अ़लाक़ाई दौरा करे

और हर हर दुकान और चौक वग़ैरा में जा कर लोगों को क़ुरआने करीम पढ़ने की तरग़ीब दिलाई जाए।

(7) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के मक़ाम पर किसी नुमायां जगह (मसलन मर्कज़ी दाख़िली दरवाज़े) पर **पेना फ़्लेक्स बेनर** लगा दिया जाए, इस से भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ने की तरग़ीब मिलेगी और **शुरका की तादाद में इज़ाफ़ा** होगा।

पेना फ़्लेक्स बेनर की तेहरीर का नमूना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में **दुरुस्त मख़ारिज** के साथ **क़ुरआने करीम, नमाज़, ग़ुस्ल, वुज़ू और सुन्नतें** भी फ़ी सबीलिल्लाह सिखाई जाती हैं।"

मक़ाम :.....वक़्त :.....ता :.....

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की तादाद बढ़ाने का तरीक़ा

- मुदर्रिसीन तय्यार किए जाएं।
- हर काबीना में **मुस्तक़िल मदनी क़ाइदा कोर्स** जारी रेहना चाहिए।
- हर सत्ह के निगरान के अहदाफ़ में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** शुरूअ करवाने का बिलख़ुसूस हदफ़ होना चाहिए।
- तालीमे क़ुरआन को आम करने के हवाले से ज़िम्मेदारान के **मदनी मश्वरों / ज़िम्मेदारान के सुन्नतों भरे इजतिमाआत** वग़ैरा में तरग़ीबात का सिलसिला जारी रेहना चाहिए।

❁ हर शोबे व त़बक़े से वाबस्ता आ़शिक़ाने रसूल पर इनफ़िरादी व इजतिमाई कोशिश की जाए मसलन डॉक्टर, वकील, जज, ताजिर, ह़कीम वग़ैरा। अगर ताजिर / डॉक्टर / ह़कीम वग़ैरा पर इनफ़िरादी कोशिश कर के येह ज़ेह्न दिया जाए कि दुकान / ऑफ़िस / क्लीनिक खुलने से पेहले या बाद में आप आधा घन्टा दे दें तो **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगाया जा सकेगा और इस त़रह़ रोज़ आप को सवाब और बरकतें ह़ासिल होंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه الْعَزِیز

❁ हर अल मदीना लाइब्रेरी, जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन व लिलबनात और मद्रसतुल मदीना लिलबनीन व लिलबनात, मद्रसतुल मदीना जुज़ वक़्ती, में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** व बालिग़ात हर रोज़ लगाया जाए।

❁ **शोबाजात के निगराने मजालिस** अपने अपने शोबों में भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** को शुरूअ़ करवाने / बढ़ाने के लिए बिल ख़ुसूस अपने शोबे के ज़िम्मेदारान को **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ने का ज़ेह्न दें, ताकि वोह अपने ही शोबे में अच्छे अन्दाज़ से **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ा सकें, इस त़रह़ मुख़्तलिफ़ शोबाजात के आ़शिक़ाने रसूल में बहुत जल्द हर त़रफ़ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की मदनी बहार आ जाएगी। इस के लिए मजलिसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** से **मुशावरत** में रहें।

आदाबे मसाजिद

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने पढ़ाने वालों को मस्जिद और फ़िनाए मस्जिद के दर्जे ज़ैल आदाब का भी बिल ख़ुसूस ख़याल रखना चाहिए :

(1) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद की कोई चीज़ इस्तेमाल करने के लिए घर नहीं ले जा सकते । (2) पानी ठन्डा करने वाला कूलर ऐ़ने मस्जिद में नहीं रख सकते। (3) ऐ़ने मस्जिद में हर किसी को कपड़े धोना, गीले कपड़े ख़ुश्क करना, लटकाना मन्अ़ है । (4) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में बिला इजाज़ते शरई किसी क़िस्म की तोड़ फोड़ नहीं कर सकते । (5) मस्जिद में बिग़ैर निय्यते एतिकाफ़ खाना पीना, सोना मन्अ़ है। (6) ऐसी अश्या जिन से इन्क़िताए सफ़ (सफ़ क़त्अ़ होती) हो (मसलन जूतों के डब्बे, स्पीकर, डेस्क वग़ैरा) सफ़ में नहीं रख सकते । इसी त़रह़ सफ़ के आख़िर में भी नहीं रख सकते कि इतमामे सफ़ (सफ़ मुकम्मल होने) में ख़लल अन्दाज़ होंगी । (7) ऐ़ने मस्जिद में मस्जिद का स्टोर नहीं बना सकते। (8) कच्चा प्याज़, कच्चा लहसन, सिगरेट वग़ैरा बदबूदार अश्या मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में खाना पीना या खाने पीने के बाद जब तक बू मुंह में हो मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में जाना नाजाइज़ व ह़राम है। (9) मस्जिद के इतना क़रीब इस्तिन्जा ख़ाने बनाना कि बदबू मस्जिद में पहुंचे नाजाइज़ व ह़राम है। (10) ऐ़ने मस्जिद में कोई भी मुस्तक़िल रिहाइश नहीं रख सकता। बादे तमाम मस्जिदिय्यत ऐ़ने मस्जिद में (या मस्जिद के ऊपर या नीचे) इमाम साह़िब की रिहाइश के लिए भी कमरा नहीं बना सकते । (11) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में उन की ज़रूरत के बिग़ैर कोई वाइरिंग नहीं कर सकते। (12) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में मद्रसे (वोह मद्रसा जो मस्जिद का न हो) का सामान मसलन डेस्क, फ़ाइलें, फ़ॉर्मज़ वग़ैरा नहीं रख सकते । (13) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में मुस्तक़िल तावीज़ाते अ़त्तारिय्या, मदनी तरबियत गाह, मदनी इन्आ़मात का बस्ता नहीं रख सकते। (14) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में तन्ज़ीमी शोबाजात (मसलन

मदनी क़ाफ़िला, मदनी इन्आ़मात और तावीज़ाते अ़त्तारिय्या वग़ैरा) के बोर्डज़ मुस्तक़िल नहीं रख सकते। (15) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में अ़लाक़े का तन्ज़ीमी सामान मुस्तक़िल नहीं रख सकते। (16) इजतिमाअ़ के इस्तेमाल के लिए लगाए गए साउन्ड के स्पीकर जो मस्जिद के न हों, उन्हें बादे इजतिमाअ़ फ़ौरन उठाना होंगे। (17) मस्जिद में बदबूदार रीह़ ख़ारिज करना मोतकिफ़ व ग़ैरे मोतकिफ़ सब को ह़राम है और ग़ैरे मोतकिफ़ को मस्जिद में ग़ैर बदबू वाली रीह़ ख़ारिज करना मकरूह है। (18) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद को बदबू से बचाना वाजिब है। (19) दुन्या की मुबाह़ बातें बिला ज़रूरते शरइ़य्या करने को मस्जिद में बैठना ह़राम है। (20) मस्जिद मुस्तह़कम व पाएदार हो तो उस को तोड़ कर नई बनाना जाइज़ नहीं। (21) मस्जिद की आमदनी मद्रसे में लगाना जाइज़ नहीं। (22) मस्जिद की चटाइयां ईदगाह वग़ैरा में नमाज़ वग़ैरा के लिए ले कर जाना जाइज़ नहीं। (23) मस्जिद में ना समझ बच्चों को लाना, पागलों को लाना, झगड़े और आवाज़ बुलन्द करना मन्अ़ है। (24) मस्जिद में अपने लिए सुवाल मन्अ़ है। (25) बिला इजाज़ते शरई एक मस्जिद का सामान दूसरी मस्जिद में लगाना नाजाइज़ है। (26) उ़लमा ने उस कूड़े की भी ताज़ीम का हुक्म दिया है जो मस्जिद से झाड़ कर फेंका जाता है। (27) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में मदनी चैनल / VCD इजतिमाअ़ मुन्अ़क़िद करना मन्अ़ है। (28) मस्जिद के मीटर्ज़ (बिजली, गेस) का किसी (जामिआ़, मद्रसे, पड़ोसी वग़ैरा) को कनेक्शन नहीं दे सकते। (29) ऐने मस्जिद में तामीराती सामान (सीमेन्ट, फट्टे, मिस्तरी के औज़ार वग़ैरा) मुस्तक़िल नहीं रख सकते अगर्चे मस्जिद का हो। (30) मस्जिद में किसी चीज़ का ख़रीदना, बेचना नाजाइज़ है मगर मोतकिफ़ को अपनी ज़रूरत की चीज़ मोल लेनी

वोह भी जबकि मबीअ़ मस्जिद से बाहर ही रहे मगर ऐसी ख़फ़ीफ़ो नज़ीफ़ व क़लील शै जिस के सबब न मस्जिद में जगह रुके न उस के अदब के ख़िलाफ़ हो और उसी वक़्त उसे अपने इफ़्तार या सहरी के लिए दरकार हो और तिजारत के लिए बैअ़ व शिराकी मोतकिफ़ को भी इजाज़त नहीं। (31) फ़िनाए मस्जिद में भी ख़रीदो फ़रोख़्त करने की इजाज़त नहीं, हां ! जिस सूरत में मस्जिद में करने की इजाज़त है उस सूरत में कर सकते हैं। (32) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में (बादे तमाम मस्जिदिय्यत) दूकान बनाना जाइज़ नहीं। (33) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में शोर गुल करने की इजाज़त नहीं। (34) फ़िनाए मस्जिद में मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ा मक्तब (यानी इमाम के हुजरे व स्टोर वग़ैरा) के इलावा कोई मक्तब (दफ़्तर) नहीं बना सकते। (35) फ़िनाए मस्जिद में सामाने मस्जिद के इलावा (तन्ज़ीमी, जामिआ़, मद्रसा, मीलाद की सजावट वग़ैरा का) सामान नहीं रख सकते। उ़श्र वग़ैरा की बोरियां नहीं रख सकते। (36) मस्जिद में वाक़ेअ़ क़ुरआने पाक रखने की अलमारी में सिर्फ़ मस्जिद के क़ुरआने पाक ही रख सकते हैं, इस के इलावा दीगर सामान (मसलन मद्रसे की फ़ाइलें, तन्ज़ीमी कारकर्दगी फ़ॉर्म, रसाइल वग़ैरा) उस अलमारी के न अन्दर रख सकते हैं और न उस के ऊपर। (37) क़ुरआने पाक की अलमारी के ऊपर कोई चीज़ नहीं रख सकते। (38) वक़्फ़ अश्या पर उ़र्फ़ के इलावा तेहरीर नहीं कर सकते। (39) मस्जिद की छत भी मस्जिद के हुक्म में है। इस के तमाम आदाब मिस्ले फ़र्शे मस्जिद हैं, बल्कि मस्जिद की छत पर तो बिला इजाज़ते शरई जाना भी मन्अ़ है। (40) मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद की छत पर मदनी चैनल का डिश एन्टीना नहीं रख सकते। (41) फ़िनाए मस्जिद का अदब भी मस्जिद ही की मानिन्द है।

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के मुतअ़ल्लिक़ मदनी मुज़ाकरों के मदनी फूल

(1) ➽ मार्केटों में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगाएं, दीगर **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** को मज़बूत़ करें । नाग़ा न हो, इस लिए हफ़्तावार इजतिमाअ़ के बाद **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगाएं ।[1]

(2) ➽ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ऐ़ने मस्जिद में एतिकाफ़ की निय्यत करवा कर लगाएं ।[2]

(3) ➽ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** से ख़ूब मदनी माहो़ल बनता है ।[3]

(4) ➽ तेह़रीक चलाएं **आओ कुरआन सीखें और सिखाएं** ।[4]

(5) ➽ जो (इस्लामी भाई) दुरुस्त कुरआन पढ़ना जानते हैं, वोह **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ज़रूर पढ़ाएं ।[5]

(6) ➽ मदनी क़ाफ़िलों, मदनी इन्आ़मात, मक्तबतुल मदीना, **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** वग़ैरा में लफ़्ज़े मदनी और मदीना ज़रूर बोला करें ।[6]

(7) ➽ **जामिअ़तुल मदीना** में दाख़िला ले लें वरना **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में ।[7]

1....मदनी फूल अज़ निगराने शूरा, तरबियती इजतिमाअ़ 18-20 मार्च सिन 2016
2....मदनी मुज़ाकरा, 9 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 5 अगस्त सिन 2014
3....मदनी मुज़ाकरा, 10 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 6 अगस्त सिन 2014
4....मदनी मुज़ाकरा, 14 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 6 दिसम्बर सिन 2014
5....मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 25 जनवरी सिन 2015
6....मदनी मुज़ाकरा, 12 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 30 मई सिन 2015
7....मदनी मुज़ाकरा, 28 रमज़ानुल मुबारक 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 15 जुलाई सिन 2015

(8) ➽ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की नाकामी की चन्द वुजूहात : वक़्त की पाबन्दी का न होना, शफ़्क़त की कमी, डांट डपट, हौसला अफ़्ज़ाई का न होना और सब के सामने शर्मिन्दा करना वग़ैरा[1]

(9) ➽ तमाम दावते इस्लामी वाले और वालियां दुन्या भर में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** व बालिग़ात का जाल फैला दें। गली गली **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** व बालिग़ात क़ाइम फ़रमाएं।[2]

मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ मदनी फूल

(1) अगर मद्रसतुल मदीना (लिलबनीन) के क़ारी साहिबान मदनी कामों में फ़आ़ल हो जाएं तो **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** और दीगर मदनी कामों में मज़ीद तरक़्क़ी हो सकती है।[3]

(2) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**, मदनी तरबियती हल्क़े और मदनी क़ाफ़िले वग़ैरा भी फ़राइज़ उ़लूम सीखने के ज़राएअ़ हैं।[4]

(3) ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी सदाए मदीना, मदनी हल्क़ा, मस्जिद दर्स, चौक दर्स, अ़लाक़ाई दौरा और **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** वग़ैरा पर ख़ुसूसी तवज्जोह (Focus) दें और इन मदनी कामों में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते रहें।[5]

1....मदनी मुज़ाकरा, 3 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 17 सितम्बर सिन 2015 ब तसर्रुफ़

2....मदनी मुज़ाकरा, 2 रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12 जनवरी सिन 2016

3....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 20-24 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1426 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 21-25 जनवरी सिन 2006

4....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 23-27 मुह़र्रमुल ह़राम 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1-5 फ़रवरी सिन 2008

5....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 15-16 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1431 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22-23 नवम्बर सिन 2010

(4) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ने वाले हर इस्लामी भाई को बा इमामा बनाने की कोशिश की जाए। इमामा शरीफ़ की बरकत से इन्सान कई गुनाहों से बच जाता है।[1]

(5) اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी से मुन्सलिक हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** व बालिग़ात में फ़ी सबीलिल्लाह कुरआने करीम पढ़ाते हैं। इस मदनी काम को मज़ीद मज़बूत करने के लिए जहां ज़रूरत हो अहल क़ारी / क़ारिया (जामिअतुल मदीना के बड़े तलबा व तालिबात, मदनी माहोल से मुन्सलिक अइम्मए किराम, मदनी इस्लामी भाइयों) से इजारा किया जा सकता है। (अगर फ़ी सबीलिल्लाह पढ़ाएं तो मदीना मदीना)[2]

(6) अन्दरून व बैरूने मुल्क के मदनी मराकिज़ फ़ैज़ाने मदीना की आबादकारी के लिए पांचों नमाज़ें बा जमाअत के साथ साथ, मद्रसतुल मदीना, जामिअतुल मदीना, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़, मदनी क़ाफ़िले, बादे फ़ज्र मदनी हल्क़ा, **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** और मदनी तरबियत गाह बेहतरीन ज़राएअ हैं।[3]

(7) निगराने काबीना, अपनी काबीना के हर हल्क़े में अमीरे एहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी, रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की VCD **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के मदनी फूल** और निगराने शूरा हज़रते मौलाना हाजी मुहम्मद इमरान अत्तारी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي की VCD **रोने वाले को जन्नत मिलेगी** चलाएं, दर्स देने और **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ने पढ़ाने का जज़्बा बेदार होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ[4]

1 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 27-28 मुहर्रमुल हराम 1433 हि. ब मुताबिक़ 23-24 दिसम्बर सिन 2011
2 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 12-14 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि. ब मुताबिक़ 31 अगस्त ता 2 सितम्बर सिन 2012
3 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 7-8 रजबुल मुरज्जब 1434 हि. ब मुताबिक़ 17-18 मई सिन 2013
4 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 15-22 शव्वालुल मुकर्रम 1432 हि. ब मुताबिक़ 14-21 सितम्बर सिन 2011

(8) हर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई 2 **मदनी दर्स** (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत) और **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ने / पढ़ाने की कोशिश करें।[1]

(9) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में 19 मिनट फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त बदल बदल कर (ऑडियो) सुनाया जाए और जो सुना हो, उस के बारे में शुरका से माहाना मुख़्तसरन तेह़रीरी टेस्ट लिया जाए। याद रहे कि मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में वीडियो चलाने की दारुल इफ़्ता एह्ले सुन्नत की जानिब से इजाज़त नहीं, लेहाज़ा सिर्फ़ ऑडियो पर ही इक्तिफ़ा किया जाए।[2]

(10) पूरी दुन्या में मस्जिद दर्स, मदनी कोर्सिज़, **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के मदनी काम की ख़ुसूसी कोशिश करें।[3]

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातों और मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवाल जवाब

शरई एह़तियातें

सुवाल 1 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ाने के बाद इस्लामी भाई शरई मसाइल पूछें तो क्या किया जाए ?

जवाब : 100 % दुरुस्त मालूम हो तो मस्अला बताने में ह़रज नहीं, बेहतर

1....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 16 जुमादल ऊला 1435 हिजरी ब मुताबिक़ 17 मार्च सिन 2013

2....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 2-5 जुल क़ादतिल ह़राम 1436 हिजरी ब मुताबिक़ 17-20 अगस्त सिन 2015

3....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 12 ता 14 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हिजरी ब मुताबिक़ 31 अगस्त ता 2 सितम्बर सिन 2012

येह है कि किसी सह़ीहुल अ़क़ीदा मुस्तनद आ़लिम या दारुल इफ़्ता एह्ले सुन्नत का नम्बर दे दिया जाए और इफ़्ता मक्तब से ही शरई राहनुमाई लेने की तरग़ीब दी जाए।

सुवाल 2 : दौराने **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** किसी मुअ़ज़्ज़ शख़्सिय्यत की आमद पर बत़ौरे ताज़ीम खड़े हो सकते हैं या नहीं ?

जवाब : तिलावत करने में कोई दीनदार मुअ़ज़्ज़ शख़्सिय्यत, बादशाहे इस्लाम या आ़लिमे दीन या पीर या उस्ताज़ या बाप आ जाए तो तिलावत करने वाला उस की ताज़ीम को खड़ा हो सकता है।(1) अलबत्ता ! मुदर्रिस जिस की ताज़ीम के लिए खड़ा हो, त़लबा भी उस की ताज़ीम के लिए खड़े हो सकते हैं और अगर कोई खड़ा न भी हो तो उसे पाबन्द नहीं किया जा सकता।

सुवाल 3 : बे वुज़ू **मदनी क़ाइदा व नमाज़ के अह़काम** पढ़ना और उन्हें छूना कैसा ?

जवाब : बे वुज़ू को क़ुरआने करीम या (किसी किताब में लिखी हुई) इस की किसी आयत का छूना ह़राम है।(2) अलबत्ता ! ज़बानी क़ुरआने अ़ज़ीम पढ़ने, ह़दीस व इल्मे दीन पढ़ने पढ़ाने और दीनी किताबों(3) को छूने के लिए वुज़ू करना मुस्तह़ब है।(4) लेहाज़ा अदब का तक़ाज़ा येही है कि मदनी क़ाइदा वग़ैरा वुज़ू कर के ही पढ़ा जाए।

1....बहारे शरीअ़त, क़ुरआने मजीद पढ़ने का बयान, 1 / 552
٢........ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب: یطلق الدعاء علی ما یشمل الثناء، ١/٣٤٧ تا ٣٤٨
3....बहारे शरीअ़त में है : बे वुज़ू और जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन का फ़िक़्ह, तफ़्सीर व ह़दीस की किताबों को छूना मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, 1 / 327)
4....बहारे शरीअ़त, वुज़ू का बयान, 1 / 302 मुल्तक़त़न।

सुवाल 4 : नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहे हों तो ऊंची आवाज़ से मदनी क़ाइदा व कुरआने पाक पढ़ना कैसा ?

जवाब : कुरआने करीम बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़्ज़ल है मगर उस सूरत में जब किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे।[1] लेहाज़ा मस्जिद में दूसरे लोग हों, नमाज़ या अपने विर्दो वज़ाइफ़ पढ़ रहे हों उस वक़्त फ़क़त इतनी आवाज़ से तिलावत कीजिए कि सिर्फ़ आप ख़ुद सुन सकें बराबर वाले को आवाज़ न पहुंचे।[2] बल्कि ऐसी सूरत में मुदर्रिस को चाहिए कि त़लबा को आहिस्ता आवाज़ में पढ़ने का कहे और अपनी आवाज़ भी धीमी कर ले।

सुवाल 5 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के इस्लामी भाइयों का नमाज़ी की त़रफ़ मुंह कर के बैठना कैसा ?

जवाब : नमाज़ी की त़रफ़ मुंह कर के बैठना मन्अ़ है, जैसा कि किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना, मकरूहे तेह़रीमी है। यूं ही दूसरे शख़्स को मुसल्ली (नमाज़ी) की त़रफ़ मुंह करना भी नाजाइज़ो गुनाह है, यानी अगर मुसल्ली (नमाज़ी) की जानिब से हो तो कराहत मुसल्ली (नमाज़ी) पर है, वरना इस (यानी नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करने वाले) पर।[3]

सुवाल 6 : मुदर्रिस को ही सह़ीह़ मख़ारिज के साथ कुरआन पढ़ना न आता हो तो उस का पढ़ाना कैसा ?

जवाब : शरई और तन्ज़ीमी त़ौर पर उसे पढ़ाने की इजाज़त नहीं। (उसे **मदनी क़ाइदा कोर्स** करने का कहा जाए, जब पढ़ ले / टेस्ट में कामयाब हो कर अहलिय्यत पैदा हो जाए तो फिर इजाज़त दी जाए।)

1....बहारे शरीअ़त, कुरआने मजीद पढ़ने का बयान, 1 / 553 ब तसर्रुफ़

2....तिलावत की फ़ज़ीलत, स. 13

3 .....درمختار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا، ص۸۸

सुवाल 7 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के लिए मस्जिद की बिजली और मस्जिद पर वक़्फ़ दीगर अश्या यानी डेस्क और कुरआने करीम वग़ैरा इस्तेमाल करना कैसा ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में चूंकि कुरआने करीम सीखा सिखाया जाता है जो कि इबादत भी है, लेहाज़ा मस्जिद की बिजली और दीगर अश्या ब ज़रूरत इस्तेमाल करने में कोई ह़रज नहीं।

सुवाल 8 : क्या बिग़ैर वुज़ू प्लास्टिक वाले दस्ताने पेहन कर कुरआने करीम छू सकते हैं ?

जवाब : ह़राम है क्यूंकि प्लास्टिक वाले दस्ताने जिस्म के ताबेअ़ होते हैं। बहारे शरीअ़त में है : रूमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न कुरआने मजीद का तो जाइज़ है, कुर्ते की आस्तीन, दूपट्टे की आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना उस के मूंढे पर है दूसरे कोने से छूना ह़राम है कि येह सब उस के ताबेअ़ हैं।[1]

सुवाल 9 : कुरआने पाक पढ़ना पढ़ाना कैसा नीज़ इसे ग़लत़ पढ़ने का क्या हुक्म है ?

जवाब : कुरआने करीम **अल्लाह** पाक का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है। अलबत्ता इसे ग़लत़ पढ़ना बिल इजमाअ़ ह़राम है। लेहाज़ा अइम्मए दीन तसरीह़ (यानी वज़ाह़त) फ़रमाते हैं कि आदमी से अगर कोई ह़र्फ़ ग़लत़ होता हो तो उस की तस्ह़ीह़ व तअ़ल्लुम में (यानी सह़ीह़ पढ़ने और सीखने के लिए) उस पर कोशिश वाजिब बल्कि बहुत से उ़लमा ने इस सई (कोशिश) की कोई ह़द मुक़र्रर न की और हुक्म दिया कि उ़म्र भर रोज़ो शब हमेशा जेह्द

1....बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, 1 / 326

رد المحتار، کتاب الطهارة، مطلب: یطلق الدعاء... الخ، ۱/۳۴۸

(कोशिश) किए जाए कभी उस के तर्क में माज़ूर न होगा।[1]

सुवाल 10 : क्या खाने पीने की अश्या मसलन गन्दुम चावल खजूर वग़ैरा को बतौ़रे उजरत तै़ कर के कुरआने करीम सिखाया जा सकता है ?

जवाब : कुरआने पाक को उजरत ले कर सिखाना जाइज़ है और वोह उजरत किसी भी ह़लाल शै की हो सकती है बशर्ते़ कि वोह शै मुअ़य्यन व मालूम हो, जैसा कि बहारे शरीअ़त में इजारे की शराइत़ में से चौथी शर्त़ है कि **उजरत मालूम हो**।[2] अगर उजरत मालूम न होगी तो फ़रीक़ैन में झगड़े का एह़तिमाल रहेगा।[3]

सुवाल 11 : अगर किसी को कुरआने पाक ग़लत़ पढ़ते हुवे सुनें तो उस वक़्त क्या करना चाहिए ?

जवाब : उस की इस्लाह़ करनी चाहिए क्यूंकि जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते़ कि बताने की वज्ह से कीना व ह़सद पैदा न हो।[4]

सुवाल 12 : लह़ने जली और लह़ने ख़फ़ी किसे केहते हैं ? नीज़ क्या इन का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है ?

जवाब : बड़ी और ज़ाहिर ग़लती को **लह़ने जली** और **छोटी और पोशीदा ग़लती** को **लह़ने ख़फ़ी** केहते हैं। लह़ने जली (बड़ी और ज़ाहिर

---

1 ....फ़तावा रज़विय्या, 6 / 262

2 ....बहारे शरीअ़त, इजारे का बयान, 3 / 108

3 ....दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बाज़ क़ारी साह़िबान का इजारा भी किया जाता है, इस की शराइत़ वग़ैरा मजलिस **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के ज़िम्मेदारान को मालूम हैं, मजलिस के इ़लावा किसी भी इस्लामी भाई को अपने त़ौर पर इजारा करने की इजाज़त नहीं।

4 ....बहारे शरीअ़त, कुरआने मजीद पढ़ने का बयान, 1 / 553

ग़लती) ह़राम है, इस में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं ।[1] जबकि लह्ने ख़फ़ी का इल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं मुस्तह़ब है । लह्ने ख़फ़ी यानी उन चीज़ों को तर्क कर देना जो हुरूफ़ की ख़ूब सूरती और तेह़्सीन में इज़ाफ़ा करती हैं, इस से माना फ़ासिद नहीं होते मगर येह मकरूह व ना पसन्द ग़लती है शरअ़न इस ग़लती से बचना मुस्तह़ब है ।[2]

सुवाल 13 : लह्ने जली की कौन कौन सी सूरतें हैं ?

जवाब : (1) एक ह़र्फ़ को दूसरे ह़र्फ़ से बदल देना मसलन اَلْحَمْدُ को اَلْهَمْدُ पढ़ना । (2) साकिन को मुतह़र्रिक या मुतह़र्रिक को साकिन पढ़ना خَلَقْنَا को خَلَقَنَا पढ़ना (साकिन को मुतह़र्रिक) خَتَمَ اللّٰهُ को خَتْمَ اللّٰهُ पढ़ना (मुतह़र्रिक को साकिन) । (3) ह़रकत को ह़रकत से बदल देना اَنْعَمْتُ को اَنْعُمْتُ पढ़ना । (4) किसी ह़र्फ़ को बढ़ा देना या घटा देना فَعَلَ को فَعَلَا पढ़ना (बढ़ाना) لَمْ يُوْلَدْ को لَمْ يُلَدْ पढ़ना (घटाना) । (5) मुख़्फ़्फ़ को मुशद्दद और मुशद्दद को मुख़्फ़्फ़ पढ़ना जैसे كَذَبَ को كَذَّبَ पढ़ना (मुख़्फ़्फ़ को मुशद्दद) और صَدَّقَ को صَدَقَ पढ़ना (मुशद्दद को मुख़्फ़्फ़), नीज़ जैसे وَتَبَّ को वक़्फ़ में ख़याल न करने से وَتَبْ हो जाता है । (6) मद्दे लाज़िम और मद्दे मुत्तसिल में क़स्र करना जैसे ضَآلِّيْنَ को ضَالِّيْنَ (मद्दे लाज़िम) وَالسَّمَآءِ को وَالسَّمَاءِ (मद्दे मुत्तसिल) पढ़ना ।[3]

1....फ़तावा रज़विय्या, 6 / 262
2....फ़ैज़ाने तजवीद, स. 29-30 मुल्तक़त़न
3....फ़ैज़ाने तजवीद, स. 29-30 मुल्तक़त़न

सुवाल 14 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों को पढ़ाया जाता है, क्या येह सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से भी साबित है ?

जवाब : जी हां ! बड़ी उ़म्र के सह़ाबए किराम का एक दूसरे से कुरआने करीम पढ़ना पढ़ाना साबित है, अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री और अबू दर्दा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के इ़लावा दीगर बहुत से सह़ाबए किराम भी एक दूसरे को कुरआने करीम पढ़ाया करते थे ।

सुवाल 15 : बाज़ अवक़ात **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ाने वाले अजीर इस्लामी भाई को एक जगह से दूसरी जगह जाते हुवे ताख़ीर हो जाती है तो ताख़ीर मिनट की कटोती होगी या बाद में टाइम दे सकता है ?

जवाब : शोबे के तै़ शुदा मदनी कामों की वज्ह से ताख़ीर हुई तो कटोती न होगी वरना होगी । मसलन मुदर्रिस एक जगह पढ़ाने के बाद रोज़ाना दूसरी जगह पढ़ाने के लिए आ़म तौ़र पर मोटर सायकल पर जाता है मगर किसी दिन रिक्षे वग़ैरा पर जाने की वज्ह से ताख़ीर हो गई तो कोई ह़रज नहीं, लेकिन अगर रास्ते में अपने किसी ज़ाती काम के लिए कहीं रुक गया या मार्केट में ज़ाती ज़रूरियात की अश्या ख़रीदने लगा तो जितना वक़्त सर्फ़ हुवा उस की कटोती करवाना होगी ।

सुवाल 16 : क्या मद्रसतुल मदीना बालिग़ात पढ़ने और पढ़ाने वाली इस्लामी बहनें अय्यामे मख़्सूसा में छुट्टियां करेंगी ? अगर नहीं करेंगी तो किन किन एह़तियातों को मद्दे नज़र रखना होगा ? अगर छुट्टियां करेंगी तो क्या इन अय्याम की कटोती होगी ?

जवाब : मुअ़ल्लिमा या मुदर्रिसा अय्यामे मख़्सूसा में मद्रसतुल मदीना बालिग़ात से छुट्टियां न करें, बल्कि उन्हें ह़ाज़िर हो कर शरीअ़त से मिलने वाली रुख़्सत पर अ़मल करना चाहिए जैसा कि फ़तावा आ़लमगीरी में है : मुअ़ल्लिमा जब अय्यामे मख़्सूसा में हो तो (कुरआने करीम का) एक एक कलिमा सांस तोड़ तोड़ कर पढ़ाए और हिज्जे कराने में भी कोई ह़रज नहीं ।[1] मगर याद रखिए ! इस सूरत के इ़लावा कुरआने करीम पढ़ने और उसे छूने वग़ैरा के ह़वाले से तमाम शरई अह़काम की पासदारी लाज़िमी है । क्यूंकि इन अय्याम में कुरआने करीम या कुरआनी आयत या इस का तर्जमा पढ़ना और छूना ह़राम है । इसी त़रह़ कुरआने करीम का तर्जमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में हो उस को भी पढ़ने या छूने में कुरआने पाक ही का सा हुक्म है ।[2]

तन्ज़ीमी एह़तियातें

सुवाल 1 : कोई इस्लामी भाई किसी दिन ताख़ीर से आए तो उस के लिए मज़ीद कुछ वक़्त बढ़ाया जा सकता है ?

जवाब : जी नहीं ! अगर एक दिन किसी एक की वज्ह से वक़्त बढ़ाएंगे तो दूसरे दिन किसी दूसरे के लिए भी बढ़ाना पड़ेगा और यूं निज़ाम में ख़राबी पैदा हो सकती है । इस लिए कोशिश येही होनी चाहिए कि तन्ज़ीमी त़ौर पर दिए गए जदवल के मुत़ाबिक़ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**

1 ..... فتاوی ھندیہ، کتاب الطھارۃ، الباب السادس فی الدماء المختصۃ بالنساء، الفصل الرابع، ۱/۴۳

2 ....बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, 1 / 327

हर सूरत में ख़त्म हो जाए, (बल्कि जो ताख़ीर से आया है उस को सबक़ अलग से दिया जाए और एक इस्लामी भाई की वज्ह से सब को न बिठाया जाए) अलबत्ता ! इस से येह भी मुराद नहीं कि निगाहें घड़ी की सूइयों पर टिकी हों कि कब 45 मिनट हों (वक़्त पूरा हो) और भागा जाए बल्कि इतनी मामूली ताख़ीर जो किसी को गिरां मेहसूस न हो इस में कोई ह़रज भी नहीं। (2, 4, या 5 मिनट)

सुवाल 2 : मदनी क़ाइदे के इलावा कोई और क़ाइदा भी पढ़ाया जा सकता है या नहीं ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में मदनी क़ाइदा पढ़ाने की ही तन्ज़ीमी तौ़र पर इजाज़त है। लेहाज़ा मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ मदनी क़ाइदे ही से सबक़ दिया और सुना जाए।

सुवाल 3 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में तै़ शुदा जदवल से ज़्यादा या कम सबक़ दिया जा सकता है ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में अगर्चे तन्ज़ीमी तौ़र पर तो येही तै़ है कि मदनी क़ाइदा 92 ता 126 दिन में जबकि क़ुरआने करीम (नाज़िरा) 12 ता 19 माह में मुकम्मल करवाया जाए, लेकिन येह मीआ़द ह़त्मी नहीं, इस में इस्लामी भाइयों की ज़ेह्नी सलाह़िय्यत को मद्दे नज़र रखते हुवे कमी बेशी मुमकिन है।

सुवाल 4 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान रोज़ाना एक ही इस्लामी भाई पढ़ाए या बदल बदल कर पढ़ाए ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में मदनी क़ाइदा व क़ुरआने पाक पढ़ाने के लिए एक ही मुदर्रिस होना ज़रूरी है, अलबत्ता ! ज़रूरत के

मुत़ाबिक़ नमाज़ के अह़काम, सुन्नतें और आदाब के लिए अलग से मुबल्लिग़ मदनी ह़ल्क़ा लगा ले तो कोई ह़रज नहीं ।

सुवाल 5 : त़ै शुदा वक़्त से कम वक़्त पर भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ख़त्म किया जा सकता है ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वाले शुरका की तादाद के मुत़ाबिक़ वक़्त कम और ज़्यादा हो सकता है, अलबत्ता ! हर त़ालिबे इ़ल्म को येह ज़ेह्न दिया जाए कि जब तक मुकम्मल सबक़ वग़ैरा सुना कर अगले दिन का सबक़ नहीं ले लेते छुट्टी न मांगा करें और ऐसा भी रिज़ामन्दी से किया जाए, ज़बरदस्ती न बिठाया जाए ।

सुवाल 6 : मोबाइल वग़ैरा से देख कर मदनी क़ाइ़दा पढ़ाया जा सकता है या नहीं ?

जवाब : बेहतर है कि मदनी क़ाइ़दे से ही पढ़ाया जाए ब सूरते दीगर मजबूरी में मोबाइल वग़ैरा से देख कर पढ़ा सकते है ।

सुवाल 7 : बड़ी रातों के इजतिमाआ़त के अय्याम में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** कैसे लगाया जाए ?

जवाब : बड़ी रातों के इजतिमाआ़त की वज्ह से **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में छुट्टी न की जाए, अलबत्ता ! वक़्त की एडजस्टमेन्ट (Adjustment) कर के पेशगी इत्तिलाअ़ के साथ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाया जाए ताकि नाग़ा न हो ।

सुवाल 8 : जिस इस्लामी भाई का सिर्फ़ मदनी क़ाइ़दा का तदरीसी इम्तिह़ान पास हो गया उसे भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाने की इजाज़त होगी ?

जवाब : जिस इस्लामी भाई का सिर्फ़ मदनी क़ाइदे का तदरीसी इम्तिहान पास होगा उसे सिर्फ़ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में मदनी क़ाइदा ही पढ़ाने की इजाज़त होगी ।

सुवाल 9 : अगर कोई मुकम्मल (45 या 35 मिनट) नहीं दे सकता कम वक़्त देना चाहता है तो क्या उस को दाख़िला मिल सकता है ?

जवाब : जी हां ! लेकिन इस का मामूल न बनाया जाए । किसी दिन अगर किसी ख़ास काम के लिए कोई जल्द जाना चाहता है तो इजाज़त दे दी जाए ।

सुवाल 10 : अगर कोई शख़्सिय्यत अलग से पढ़ना चाहे तो क्या करें ?

जवाब : अगर कोई शख़्सिय्यत अलग से पढ़ना चाहे तो एक को भी पढ़ा सकते हैं, इस का दौरानिया कमो बेश 15 मिनट है ।

सुवाल 11 : कितनी उ़म्र के इस्लामी भाई को **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ाया जाएगा ?

जवाब : 15 साल वाले से ज़ाइद उ़म्र वाले को पढ़ाया जाए ।

सुवाल 12 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के शुरका का लिबास व इमामा कैसा होना चाहिए ?

जवाब : इस्लामी भाई चाहें तो हर उस रंग का लिबास व इमामा शरीफ़ पेहन सकते हैं जो उ़लमा, सुलहा, शुरफ़ा में राइज हो और जिन की शरीअ़त में मुमानअ़त न हो ।

सुवाल 13 : क्या किसी एक फ़र्द को भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाया जाए तो उसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ाना शुमार करेंगे ?

जवाब : सिर्फ़ मदनी इन्आ़म पर अ़मल माना जाएगा मगर दो या दो से ज़ाइद अफ़राद को पढ़ाने पर ही **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** शुमार होगा।

सुवाल 14 : बाज़ मख़्सूस अय्याम में मार्केटों में रश होता है, जिस की वज्ह से मार्केटों में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाना बसा अवक़ात मुम्किन नहीं होता, तो अब अजीर इस्लामी भाई उन अय्याम में क्या करे ?

जवाब : मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर चौक दर्स दिया जाए या जितने दिन नहीं दे सकते उतने दिन किसी और मक़ाम पर नमाज़ सीखने सिखाने का मदनी ह़ल्क़ा शुरूअ़ किया जाए और मुकम्मल नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल नमाज़े जनाज़ा और दुआ़एं सिखाई जाएं और क़ुरआने करीम की आख़िरी 10 सूरतें याद कराई जाएं।

सुवाल 15 : अगर मुदर्रिस अजीर हो और वोह **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाने जाए मगर पढ़ने वाले न आएं तो अब क्या करे ?

जवाब : अगर ऐसा कभी कभार हो कि कोई त़ालिबे इ़ल्म न आए और मुदर्रिस अजीर हो तो उसे चाहिए कि वोह अपने इजारे के वक़्त तक वहीं बैठे, चाहे तो ज़िक्र करता रहे। लेकिन अगर बार बार ऐसा हो रहा हो तो मजलिस की मुशावरत से मक़ाम तब्दील कर लें, ब सूरते दीगर इनफ़िरादी कोशिश करें, मुलाक़ातें करें, मदनी कामों की दावत दें वग़ैरा।

सुवाल 16 : स्कूल्ज़ कॉलेजिज़ में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** भी लगाया जाता है और बसा अवक़ात वहां मुदर्रिस से इजारा कर लिया जाता है, चुनान्चे पढ़ने वालों को जब तात़ीलात हों तो उन दिनों में अजीर का जदवल क्या होना चाहिए ?

जवाब : ऐसी जगह इजारा करते वक़्त अजीर से पेहले ही तै़ कर लिया जाए कि तात़ीलात के अय्याम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मार्केट वग़ैरा में नमाज़ सीखने सिखाने का मदनी ह़ल्क़ा शुरूअ़ किया जाएगा जिस में मुकम्मल नमाज़ व अज़्कार, मसाइले नमाज़, सुन्नतें और आदाब, कपड़ा पाक करने का त़रीक़ा, नमाज़े जनाज़ा की दुआ़एं और चौक दर्स भी दिया जाएगा । अलबत्ता मक़ामात का तअ़य्युन मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार की मुशावरत से किया जाएगा ।

सुवाल 17 : क्या **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाने वाला सबक़ पर तवज्जोह न देने या कभी शरारतें वग़ैरा करने पर किसी को मार या डांट डपट कर सकता है ?

जवाब : जी नहीं ! इस की हरगिज़ इजाज़त नहीं, अलबत्ता ! नर्मी और मुनासिब ह़िक्मते अ़मली से मदनी तरबियत की जाए ।

सुवाल 18 : जिन अ़लाक़ों में मार्केटें सुब्ह़ को देर से खुलती और रात को देर से बन्द होती हैं, वहां **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** कैसे लगाया जाए ?

जवाब : ऐसे शह्र जहां मार्केटें सुब्ह़ देर से खुलती और रात को देर से बन्द होती हैं वहां बेहतर येह है कि मुदर्रिस से रात का अलग से इजारा कर लिया जाए ।

सुवाल 19 : जो इस्लामी भाई क़ैदियों को क़ुरआने करीम पढ़ाते हैं क्या वोह भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाना केहलाएगा ?

जवाब : जी हां ! किसी भी शोबे के तह़्त कमो बेश 15 साल वालों को क़ुरआने करीम पढ़ाएंगे तो तन्ज़ीमी त़ौर पर वोह **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ही शुमार होगा ।

सुवाल 20 : मोबाइल एप्लीकेशन (Mobile Application) की मदद से मदनी क़ाइदा पढ़ने वाला **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ने वाला केहलाएगा ?

जवाब : ऐसी जगह जहां मुदर्रिस न मिल सके वहां सिर्फ़ मदनी इन्आ़म पर अ़मल माना जाएगा ।

सुवाल 21 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में जब पढ़ने वालों की तादाद ज़्यादा हो जाए और सब पर तवज्जोह देना बहुत मुश्किल हो तो क्या किया जाए ?

जवाब : शुरका को दो दरजात में तक़्सीम कर के एक और मुदर्रिस रखा जाए या उन इस्लामी भाइयों की मुआ़वनत लीजिए जो दुरुस्त और अच्छा पढ़ना सीख चुके हैं और पढ़ाने की सलाहिय्यत भी रखते हों ताकि साथ साथ येह भी दीगर इस्लामी भाइयों का सबक़ सुनें और याद करवाएं । मसलन जिन का सबक़ कुरआने करीम पर हो उन के ज़िम्मे मदनी क़ाइदे वालों का सबक़ सुनना याद कराना हो या सब ही मदनी क़ाइदे पर हैं तो दो या तीन मदनी ह़ल्क़े बना लें और हर एक ह़ल्क़े वाले को एक वक़्त में ही सबक़ पढ़ा दें और अलग अलग सबक़ सुन लें ।

मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवालात

सुवाल 1 : क्या **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में सिर्फ़ कुरआने करीम ही पढ़ाया जाता है ?

जवाब : जी नहीं ! **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में सिर्फ़ कुरआने करीम ही नहीं पढ़ाया जाता बल्कि फ़र्ज़ उ़लूम, नमाज़ के अह़काम, मुतफ़र्रिक़ मसनून दुआ़एं, सुन्नतें व आदाब, दर्सो बयान का त़रीक़ा और मसाइल सिखाने के साथ साथ ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े रसूल का पैकर बनाने की कोशिश भी की जाती है ।

सुवाल 2 : क्या बैरूने मुल्क में भी **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का दौरानिया 63 मिनट है ?

जवाब : मुल्को बैरूने मुल्क मसाजिद में लगने वाले मदारिसुल मदीना बालिग़ान का दौरानिया 45 मिनट और मार्केट, इदारों वग़ैरा में 35 मिनट।

सुवाल 3 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के लिए किसी जगह को ख़ास करना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के लिए कोई जगह ख़ास कर लेने में कोई ह़रज नहीं। क्यूंकि **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के लिए अगर मख़्सूस जगह तै़ कर ली जाए तो ताख़ीर से आने वाले नमाज़ियों को पेहले ही मालूम होगा कि यहां इस्लामी भाई क़ुरआने करीम सीखते हैं, यूं वोह उस जगह नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। नीज़ अगर रोज़ाना बदल बदल कर **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगाया जाएगा तो नमाज़ियों को भी परेशानी होगी।

सुवाल 4 : मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** किस जगह लगाया जाए ? दाएं, बाएं, दरमियान में या पीछे ?

जवाब : मस्जिद में जिस नमाज़ के बाद **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** शुरूअ़ करना है उस नमाज़ में नमाज़ियों की तादाद को पेशे नज़र रखते हुवे जगह का तअ़य्युन किया जाए। अलबत्ता ! फ़ज्र, अ़स्र और इ़शा की नमाज़ के बाद **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के लिए मेह़राब के पास वाली जगह बेहतर रहेगी (जबकि नमाज़ियों को तशवीश न हो)। ज़ोहर और मग़रिब के बाद लगने वाले **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के लिए सीधी जानिब वाला कोना बेहतर रहेगा या फिर जहां सहूलत हो वहां लगाया जाए। बहर ह़ाल **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ऐसी जगह लगाया जाए जिस में किसी को कोई दुश्वारी न हो और वोह जगह नुमायां हो कि सब को नज़र भी आए कि

दावते इस्लामी वाले क़ुरआने करीम पढ़ा रहे हैं, मगर निय्यत येह हो कि दीगर इस्लामी भाइयों को तरग़ीब मिले, दिखावा और रियाकारी हरगिज़ मक़्सूद न हो।

सुवाल 5 : अगर मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की जगह मख़्सूस हो और वक़्त भी मख़्सूस हो तो क्या मुक़र्ररा वक़्त पर वहां किसी को नमाज़ पढ़ने से रोका जा सकता है ?

जवाब : ऐसी सूरत में हिक्मते अ़मली से काम लीजिए, अगर यक़ीन हो कि उस नमाज़ी से अ़र्ज़ करेंगे तो मान जाएगा तो अ़र्ज़ करने में कोई ह़रज नहीं, वरना कुछ इन्तिज़ार फ़रमा लीजिए या उस दिन किसी दूसरी जगह लगा लीजिए। ख़्वाह म ख़्वाह किसी से उलझने की कोई सूरत पैदा न होने दीजिए।

सुवाल 6 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान कहां कहां क़ाइम हो सकते हैं ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान शरई व तन्ज़ीमी एह़तियातों के साथ मसाजिद, मदारिस, स्कूल, कॉलेज, हॉस्टेल, यूनीवर्सिटी, हस्पताल, पेट्रोल पम्प, कारख़ाने, फ़ैक्ट्री, ग़ल्ला मन्डी, सब्ज़ी मन्डी, हर त़रह़ की मार्केट, रेलवे स्टेशन, लारी अड्डे, खेल के मैदान, पार्क, स्टेडियम, कचहरी चेम्बर, जेल, थाने, डेरे, बैठक और घर वग़ैरा में लगाए जा सकते हैं।

सुवाल 7 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वाले इस्लामी भाइयों से किस त़रह़ के तन्ज़ीमी काम लिए जा सकते हैं ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वाले ज़ेह्नी त़ौर पर दावते इस्लामी के एह़सान मन्द होते हैं इस लिए उन से सदाए मदीना, इजतिमाअ़ में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और दीगर मदनी काम करवाने के साथ साथ मदनी अ़त़िय्यात, उ़श्र और क़ुरबानी की खालें भी जम्अ़ करवा सकते हैं। येही नहीं बल्कि **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में पढ़ने वाले इस्लामी

भाइयों को 12 मदनी कामों में से हर एक मदनी काम के लिए उन की मसरूफ़िय्यत को पेशे नज़र रखते हुवे हिक्मते अ़मली के साथ ज़िम्मेदारी दी जा सकती है।

सुवाल 8 : मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की इजाज़त न हो तो क्या किया जाए ?

जवाब : मस्जिद में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की इजाज़त न हो तो घर, दुकान और फ़ेक्ट्री वग़ैरा जहां मुमकिन हो वहां शुरूअ़ किया जा सकता है।

सुवाल 9 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वालों की तादाद कितनी होनी चाहिए ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के एक दरजे में पढ़ने वालों की तादाद ज़्यादा से ज़्यादा 19 होनी चाहिए। जबकि किसी भी जगह **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की कारकर्दगी का अन्दाज़ा इस त़रह़ लगाया जा सकता है कि जिस **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में शुरका की तादाद 12 ता 19 हो उस की कैफ़िय्यत **मुमताज़,** जहां तादाद 6 ता 11 हो वोह **बेहतर** और 1 ता 5 तादाद की सूरत में कैफ़िय्यत **मुनासिब** होगी।

सुवाल 10 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान को फ़क़त़ मद्रसा कहा जा सकता है या नहीं ?

जवाब : तन्ज़ीमी इस्ति़लाह़ के मुत़ाबिक़ **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** ही केहना चाहिए।

सुवाल 11 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ाने के लिए क्या ह़ाफ़िज़ो क़ारी होना ज़रूरी है ?

जवाब : ह़ाफ़िज़ो क़ारी होना ज़रूरी नहीं, अलबत्ता ! **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाने के लिए तन्ज़ीमी त़ौर पर त़ै शुदा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़

तफ़्तीश मजलिस के ज़रीए टेस्ट पास करने वाले को ही **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पढ़ाने की इजाज़त है।

सुवाल 12 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की निसाबी कुतुब कौन कौन सी हैं ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की निसाबी कुतुब येह हैं : **''मदनी क़ाइदा''**, **''कुरआने करीम''**, **''नमाज़ के अह़काम''**, **''सुन्नतें और आदाब''** और **''मदनी इन्आ़मात''** का रिसाला। (नमाज़ के अज़्कार वग़ैरा याद कराने के लिए **''फ़ैज़ाने नमाज़''** से भी याद करवाया जा सकता है)

सुवाल 13 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में मदनी क़ाइदा कितनी मुद्दत में ख़त्म कराया जाता है ?

जवाब : मदनी क़ाइदे की तक्मील मुद्दत और कैफ़िय्यत कुछ यूं तै़ है :

दिन	कैफ़िय्यत	दिन	कैफ़िय्यत	दिन	कैफ़िय्यत
92	मुमताज़	126	बेहतर	126 से ज़ाइद	कमज़ोर

सुवाल 14 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में कुरआने करीम कितनी मुद्दत में मुकम्मल कराया जाता है ?

जवाब : कुरआने करीम की तक्मील मुद्दत और कैफ़िय्यत कुछ यूं तै़ है :

माह	कैफ़िय्यत	माह	कैफ़िय्यत	माह	कैफ़िय्यत
12	मुमताज़	19	बेहतर	19 से ज़ाइद	कमज़ोर

सुवाल 15 : क्या एक मुदर्रिस की कारकर्दगी का जाइज़ा लेने के लिए भी कोई त़रीक़ा तै़ है कि उस ने इतने दिनों में कितने अफ़राद को मदनी क़ाइदा व कुरआने पाक मुकम्मल कराना है ?

जवाब : जी हां ! 12 माह में मदनी क़ाइदा 31 ता 40 अफ़राद को मुकम्मल कराने पर मुमताज़ कैफ़िय्यत, 25 ता 30 अफ़राद को मुकम्मल

कराने पर बेहतर कैफ़िय्यत और 25 से कम अफ़राद को मुकम्मल कराने पर कमज़ोर कैफ़िय्यत शुमार होगी । इसी त़रह़ क़ुरआने पाक 11 ता 15 अफ़राद को मुकम्मल कराने पर मुमताज़ कैफ़िय्यत, 5 ता 10 अफ़राद को मुकम्मल कराने पर बेहतर कैफ़िय्यत और 5 से कम अफ़राद को मुकम्मल कराने पर कमज़ोर कैफ़िय्यत शुमार होगी । नीज़ इस का रेकॉर्ड बनाना, मजलिस को जम्अ़ कराना भी मुदर्रिस की अहम ज़िम्मेदारी है ।

सुवाल 16 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के लिए कितने अवक़ात का अजीर रखा जाता है ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ाने के लिए 63 और 120 मिनट, जबकि 4 और 8 घन्टे पर इन्दज़्ज़रूरत इजारे पर रखा जाता है ।

सुवाल 17 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ने वालों के इम्तिह़ान का क्या त़रीक़ए कार त़ै है ?

जवाब : तन्ज़ीमी त़ौर पर रात के **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के जाइज़ों के लिए हर डिवीज़न पर 15 ता 22 मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पर एक 90 मिनट का मुफ़त्तिश रखने का त़ै है, जो हर माह **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में ह़ाज़िरी देगा, त़लबा की तादाद, मुदर्रिस की ह़ाज़िरी और निसाब की तक्मील की कैफ़िय्यत वग़ैरा चेक करेगा । माहाना कारकर्दगी बनाएगा और 12 माह में 4 बार शुरकाए **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का इम्तिह़ान लेगा और उस का रिज़ल्ट बना कर रुक्ने काबीना के ज़रीए ज़ोन ज़िम्मेदार और ज़ोन ज़िम्मेदार, रुक्ने मजलिस (रीजन ज़िम्मेदार) और शोबा इम्तिह़ान को पहुंचाएगा ।

सुवाल 18 : अगर किसी डिवीज़न में रात के **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** न लगते हों या तादाद 15 से कम हो तो उन का जाइज़ा कौन लेगा ?

जवाब : ऐसी सूरते ह़ाल में मुफ़त्तिश को नया **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**

शुरूअ़ कराने के अहदाफ़ दिए जाएंगे और जो मदारिस शुरूअ़ हो जाएंगे, पेशगी जदवल के मुताबिक़ उन के जाइज़े और मज़बूती के लिए मुफ़त्तिश की ह़ाज़िरी होती रहेगी।

सुवाल 19 : मार्केट, स्कूल, कॉलेज और दीगर मक़ामात पर लगने वाले **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के जाइज़े का क्या त़रीक़ए कार है ?

जवाब : मसाजिद के इ़लावा मक़ामात पर लगने वाले **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** 100 ता 120 मदारिस पर 8 घन्टे के एक मुफ़त्तिश के तक़र्रुर का जदवल है।

सुवाल 20 : मुफ़त्तिश का माहाना क्या जदवल है ?

जवाब : रोज़ाना 6 ता 8 **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** दिन और एक रात का जाइज़ा करेगा। अय्याम की तक़्सीम कारी यूं होगी : तफ़्तीश 16 दिन, मक्तब (दफ़्तर / ऑफ़िस) अय्याम 4 दिन, मदनी क़ाफ़िला 3 दिन, रुख़्सत अय्याम 4 दिन, माहाना कारकर्दगी 1 दिन और मदनी मश्वरा 2 दिन। कुल अय्याम 30 दिन।

सुवाल 21 : मुफ़त्तिशीन के तक़र्रुर और इस के तमाम तर निज़ाम का जदवल क्या है ?

जवाब : जाइज़ों के निज़ाम को मज़बूत़ करने के लिए शोबा इम्तिह़ान बनाया गया है, मुल्क सत़ह़ पर एक **रुक्ने मजलिस** को इस की ज़िम्मेदारी दी गई है जो अराकीने मजलिस की मुशावरत से हर हर ज़ोन पर एक **रुक्ने काबीना** को शोबा इम्तिह़ान का रुक्न बनाएंगे और येह **रुक्ने काबीना** ज़ोन सत़ह़ पर **रुक्ने मजलिस** की मुशावरत से हर हर डिवीज़न पर मुफ़त्तिश के तक़र्रुर का निज़ाम बनाएगा। यूं अव्वलन येह मुकम्मल काम मौजूदा **अराकीने मजलिस** की मुआ़वनत से ही हो रहा है, अलबत्ता ! बहुत ज़्यादा मदारिस हो जाने पर शोबा इम्तिह़ान का मुकम्मल निज़ाम अलग

बनाया जाएगा, जिस के तक़र्रुर का जदवल दर्जे ज़ैल होगा : मुल्क सत्ह़ पर शोबा ज़िम्मेदार, ज़ोन ज़िम्मेदार, रुक्ने काबीना और हर डिवीज़न पर मुफ़त्तिश का तक़र्रुर होगा जो मार्केट के **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** पर अलग से और रात के लिए अलग मुफ़त्तिश का तक़र्रुर होगा जो तमाम **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के जाइज़े ले कर कमज़ोरियों की निशानदेही करेगा और मजलिसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के तआ़वुन से उन कमज़ोरियों को दूर कर के बेहतरी की कोशिश करेगा।

सुवाल 22 : मार्केट में लगने वाले **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का जदवल और दौरानिया कितना है ?

जवाब : मार्केट में लगने वाले **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का जदवल और दौरानिया तादाद के मुत़ाबिक़ कम ज़्यादा होता है, कम से कम तादाद 5 है, इस का कुल दौरानिया 35 मिनट है 25 मिनट सबक़ देना सुनना, 5 मिनट सुन्नतें व आदाब, 5 मिनट ग़ौरो फ़िक्र और दुआ़।

सुवाल 23 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की कामयाबी के लिए किन किन उमूर को मल्हूज़े ख़ात़िर रखा जाए और इस में दिलचस्पी और इस्तिक़ामत के लिए किन किन मदनी फूलों पर अ़मल किया जाए कि इस्लामी भाई पढ़ते रहें ?

जवाब : चन्द उमूर का लेह़ाज़ मुफ़ीद है : (1) वक़्त की पाबन्दी (2) मुदर्रिस तन्ज़ीमी ज़ेह्न वाला हो (3) नफ़ासत व नज़ाफ़त वाला हो (4) पढ़ाने में अमीर ग़रीब सब के साथ यक्सां सुलूक करे (5) सबक़ तवज्जोह से पढ़ाए और सुने (6) डांट डपट और ज़िल्लत आमेज़ गुफ़्तगू न करे (7) ख़ुश अख़्लाक़ हो (8) मिलनसार हो (9) नाग़ा करने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश करे (10) तै़ शुदा निसाब को तै़ शुदा अवक़ात में मुकम्मल कराने की कोशिश करे (11) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की तादाद को बढ़ाने की कोशिश जारी रखे, बल्कि **मद्रसतुल मदीना**

बालिग़ान पढ़ने वालों में तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे।

सुवाल 24 : क्या **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के निसाब के इ़लावा भी कोई किताब पढ़ा सकते हैं ?

जवाब : जी नहीं ! बल्कि तन्ज़ीमी तौ़र पर तै़ शुदा निसाब ही पढ़ाना लाज़िमी है।

सुवाल 25 : कई इस्लामी भाई ऐसे मिलते हैं, जिन्हें मदनी क़ाइ़दा पढ़ने में शर्म आती है और वोह केहते हैं हम ने इतनी बार क़ुरआन पढ़ लिया है, ह़ालांकि उन के मख़ारिज दुरुस्त नहीं होते तो ऐसे इस्लामी भाइयों का ज़ेह्न कैसे बनाया जाए ?

जवाब : तजवीद के साथ दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ने की अहम्मिय्यत बताई जाए एक ह़र्फ़ का दूसरे ह़र्फ़ से नुमायां होना पढ़ कर बताया जाए और ग़लती की सूरत में माना तब्दील हो जाने की चन्द मिसालें भी बताई जाएं, दुरुस्त पढ़ने के फ़ज़ाइल और ग़लत़ पढ़ने के नुक़्सानात पर तवज्जोह दिलाई जाए और नर्मी से सह़ीह़ मख़ारिज के साथ क़ुरआने पाक सीखने की तरग़ीब दिलाई जाए।

सुवाल 26 : बाज़ इस्लामी भाइयों को कोशिश के बा वुजूद मदनी क़ाइ़दे में मौजूद क़वाइ़द ज़बानी याद नहीं होते तो ऐसे इस्लामी भाई क्या करें ?

जवाब : क़वाइ़द ज़बानी याद करना अगर्चे अच्छी बात है, मगर इस की अस्ल इजरा यानी क़ाइ़दे के मुत़ाबिक़ ह़र्फ़ या लफ़्ज़ को दुरुस्त पढ़ना है, लेहाज़ा अगर किसी को क़वाइ़द ज़बानी याद नहीं मगर वोह ह़ुरूफ़ व अल्फ़ाज़ की अदाएगी सह़ीह़ कर रहा है तो मदीना मदीना।

सुवाल 27 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में सालाना छुट्टियों का क्या जदवल है ?

जवाब : हर मुल्क में मुल्की मुशावरत / मुल्की सत़ह़ पर इजारा मजलिस के मश्वरे से सालाना छुट्टियों का केलेन्डर तरतीब दे दिया जाए।

नम्बर शुमार	नाम माह	तफ़्सील तातीलात	कुल तातीलात
1	शव्वालुल मुकर्रम	यकुम ता 3	3
2	ज़ुल हिज्जतिल ह़राम	10 ता 13	4
3	मुह़र्रमुल ह़राम	9-10	2
4	रबीउ़ल अव्वल	12	1
5	रजबुल मुरज्जब	27	1
6	शाबानुल मुअ़ज़्ज़म	15	1
7	रमज़ानुल मुबारक	27	1
8	अगस्त	15	1

सुवाल 28 : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में ज़िम्मेदारान का छुट्टी लेने का त़रीक़ए कार क्या है ?

जवाब : मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में ज़िम्मेदारान का छुट्टी लेने का त़रीक़ए कार दर्जे ज़ैल है :

नम्बर शुमार	ज़िम्मेदार	किस से छुट्टी लेंगे ?
1	मुअ़ल्लिम	रुक्ने काबीना से
2	डिवीज़न ज़िम्मेदार / रुक्ने काबीना	ज़ोन / मुल्की ज़िम्मेदार से
3	रुक्ने ज़ोन	रीजन / मुल्की ज़िम्मेदार से
4	रीजन / मुल्की ज़िम्मेदार	मुल्की मुशावरत के निगरान से

कैफ़ो सुरूरो लज़्ज़त ह़ासिल न हो तो केहना
तजवीद के मुत़ाबिक़ कुरआन पढ़ के तो देखो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	۞ ۞ ۞ ۞ ۞	موسوعۃ ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۲	کنز العمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
روح البیان	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ	جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
صحیح البخاری	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	نوادر الاصول	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۳ھ
صحیح مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	فیض القدیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
سنن الترمذی	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	مرآۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات
المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ	الدر المختار	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳
		رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	الفتاوی الھندیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۵ھ
سنن الدارمی	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۱ھ	بہجۃ الاسرار ومعدن الانوار	مؤسسۃ الشرف لاہور پاکستان
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ		
نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۵ھ	غوث پاک کے حالات	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۷ھ
الطبقات الکبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۳ھ	فیضان امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
الغنیۃ لطالبی طریق الحق	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	تلاوت کی فضیلت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ	فیضان تجوید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۵ھ
تاریخ مدینہ دمشق	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ	وسائل بخشش (مرمم)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۶ھ
معرفۃ القراء الکبار	مدیریۃ النشر والطباعۃ الترکی	۞ ۞ ۞	۞ ۞ ۞ ۞ ۞

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1
तिलावते कुरआने पाक की अहम्मिय्यत व ज़रूरत	1
"फ़ुरक़ाने ह़मीद" के नव हुरूफ़ की निस्बत से कुरआने पाक पढ़ने के 9 फ़ज़ाइल	3
ज़मानए नबवी में कुरआने पाक सीखने का मुबारक अन्दाज़	5
सह़ाबए किराम का कुरआने पाक सिखाना	5
एह्ले सुफ़्फ़ा और कुरआने पाक	6
कुरआने पाक सिखाने के लिए दूर दराज़ का सफ़र	8
गवर्नरी पर तालीमे कुरआने पाक को तरजीह़ देना	10
एह्ले शाम पर सब से बड़ा एह़सान	12
तरबियत की अहम्मिय्यत	13
कुरआने पाक एक दूसरे से पूछ कर पढ़ना	14
40 साल तक कुरआने करीम पढ़ाया	14
हुज़ूरे ग़ौसे पाक कुरआने करीम पढ़ाया करते	15
फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं	15
गुलूकार (Singer) इमाम बन गया	16
तालीमे कुरआन और हमारी ह़ालते ज़ार	18
ख़िदमते कुरआने पाक और दावते इस्लामी	19
कुरआन सीखने वालों के लिए ख़ुश ख़बरी	20
दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ने का शरई हुक्म	21
किस क़दर कुरआने पाक सीखना ज़रूरी है ?	22
"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के 7 मदनी मक़ासिद	23
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की मदनी बहारें	24
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के त़ालिबे इल्म मुफ़्ती कैसे बने ?	24
"ख़ुदाया ज़ौक़ दे कुरआन पढ़ने का पढ़ाने का" के 29 हुरूफ़ की निस्बत से मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के 29 मदनी फूल	26
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में त़लबा की तादाद बढ़ाने का नुस्ख़ा	36
पेना फ़्लेक्स बेनर की तेह़रीर का नमूना	38
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की तादाद बढ़ाने का त़रीक़ा	38
आदाबे मसाजिद	39
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के मुतअ़ल्लिक़ मदनी मुज़ाकरों के मदनी फूल	43
मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ मदनी फूल	44
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातों और मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवाल जवाब	46
शरई एह़तियातें	46
तन्ज़ीमी एह़तियातें	53
मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवालात	59
मआख़िज़ो मराजेअ़	69
फ़ेहरिस्त	70

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिए

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''ग़ौरो फ़िक्र'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए ।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

DAWAT-E-ISLAMI

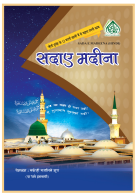

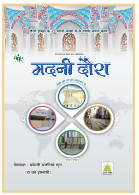

0148668

MAKTABA TUL MADINA

Faizane Madina, Mirzapur, Ahmedabad-01 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006

maktabadelhi@gmail.com 011-23284560, 8178862570

www.dawateislamihind.net FOR HOME DELIVERY 9978626025 *T&C apply